॥ श्रीहरिः ॥

॥ विवाह संस्कार पद्धति ॥

विषय अनुक्रमणिका

१.	**विवाह अनुक्रमणिका**	**02**
२.	**वर-रक्षा / वरिच्छा / फलदान**	**03**
३.	**वर-वरण (तिलक-सगाई)**	**04**
	गणेश-अम्बिका पूजन	08
	कलश पूजन	09
	षोडश मातृका पूजन	11
	नवग्रह पूजन	12
	वर पूजन	18
४.	**विवाह पूर्वांग पूजन**	**20**
	मण्डप स्थापन, कलश स्थापन, हरिद्रालेपन, कंकण बन्धन, पून-पुनौती, सिल पोहना, मन्त्री पूजा, कोहबर पूजा, द्वारमातृका पूजन, मातृका पूजन, सप्तघृतमातृका पूजन, लोकाचार	
५.	**देव-पितृ निमन्त्रण**	**29**
६.	**नान्दीमुख श्राद्ध**	**32**
७.	**बारात प्रस्थान**	**36**
८.	**द्वार पूजन**	**36**
	वर पूजन, दुर्गा जनेऊ, चढाव, तागपाट,	
९.	**विवाह प्रारम्भ**	**41**
	वर का आगमन, तिलक, आरती, उपानह त्याग, आसन, विष्टर, पाद्य, तिलक, माला, पुनः विष्टरदान अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, अंग स्पर्श, तृण क्षेदन	
१०.	**अग्निस्थापन**	**46**
११.	वर वस्त्र धारण, कन्या आगमन, वस्त्र प्रदान, सम्मुखीकरण, ग्रन्थिबन्धन	47
१२.	**शाखोच्चार या गोत्रोच्चार**	**48**
१३.	**कन्यादान विधि**	**51**
	संकल्प, पौंपुजी, गोदान, पाणि ग्रहण, दृढ़ पुरुष स्थापन, परस्पर निरीक्षण	
१४.	**विवाह होम**	**55**
	अन्तःपट हवन, लाजा होम, अश्मारोहण, अवशिष्ट लाजाहोम, चौथी परिक्रमा, प्राजापत्य हवन	
१५.	**सप्तपदी**	**66**
१६.	**सूर्यदर्शन, ध्रुवदर्शन, हृदयालम्भन**	**69**
१७.	**सुमंगली (सिन्दूरदान)**	**69**
१८.	**ग्रन्थि बन्धन**	**70**
१९.	**अभिषेक, आशीर्वाद**	**71**
२०.	**आवाहित देवताओं का उत्तर पूजन**	**72**
२१.	**आचार्य दक्षिणा**	**72**
२२.	**गौने की प्रक्रिया**	**73**
२३.	**कंकण मोक्षण, ग्रन्थि विमोक**	**74**
२४.	**वर-वधू के तीन रात पालनीय नियम**	**74**
२५.	**चतुर्थीकर्म**	**75**
२६.	**ग्रह पूजा दान संकल्प**	**80**
	सूर्य, गुरु, चन्द्र पूजा दान संकल्प	
२७.	**वैधव्य परिहार के उपाय**	**82**
	वैधब्य परिहार व्रत, कुम्भ विवाह, अश्वत्थ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह	
२८.	**शाखोच्चार सम्बन्धी मांगलिक श्लोक**	**85**
२९.	**विवाह मुहूर्त विचार**	**87**

॥ विवाह अनुक्रमणिका ॥

विवाह मण्डप मे कई बार इस बात को लेकर कि कौन सी प्रक्रिया कब की जाय ! इसको लेकर भिन्न-भिन्न मत मिलते हैं ! परन्तु वह मत जो तार्किक और अधिक से अधिक पद्धतियों मे पाए जायं उन्ही को मान्यता दी जानी चाहिए !

- **साधुस्ततो विष्टरं पाद्यविष्टरम् अर्घाचमं वै मधुपर्क वाक्य में।**
  उत्सृजत्तृणान्यत्त्वथ वेदिकर्म स्याग्निमभ्यर्चय कोतुकारद्वारः ॥
- **आनीय कन्या वसनं वराय, ददाति दाता वर-वस्त्र-दानम्।**
  परस्परं दातृकग्रन्थिबन्धनं, संकल्प-कन्या-वरणं च होमः ॥
- **लाजाहुतिर्ग्राम्यवचः सुमंगली परिवर्ति वामे ग्रथनं विधत्ते।**
  स्विष्टाहुतिः स्यादभिषेकदानं कृत्वा वरः कौतुकमन्दिरं व्रजेत् ॥

कन्या के पिता द्वारा वर को मण्डप मे बैठाना, प्रथम विष्टर देना, पाद्य देना, दूसरा विष्टर देना, अर्घ्य-आचमन-मधुपर्क देना ! वर के द्वारा अंगन्यास करना, त्रिण परित्याग, पंचभूसंस्कार अग्नि स्थापन, कोहबर से कन्या को मण्डप मे बुलाना, कन्या के पिता द्वारा वर को चतुस्वस्त्र देना, कन्या के माता-पिता का प्रस्पर ग्रंथि बंधन करना, कन्या दान का संकल्प, ब्राहमण वरण, हवन, लाजाहूति, सप्त पदी, कन्या को वर के वाम भाग में बैठाना, कन्या के माँग मे सिंदूर भरना, वर और कन्या का ग्रंथि बंधन, ध्रुव दर्शन, स्विष्टकृत होम, अभिषेक और वर-कन्या का कोहबर मे जाना !

इसी प्रक्रिया को बहुतायत पद्धतियों मे पाया जाता है ! विवाह संस्कार की दृष्टिकोण से तार्किक भी ! हाँ इन सब के बीच मे कुछ लौकिक परम्पराओं का भी समावेश किया जाता है और किया जाना भी चाहिए ! लौकिक मान्यताओं-परम्पराओं को दरकिनार कर किसी भी संस्कार का सम्पादन नही होना चाहिए !

॥ वर-रक्षा / वरिच्छा / फलदान ॥

- वर पूर्वमुख तथा फलदान चढ़ाने वाला व्यक्ति (कन्या-पिता या कन्या भ्राता) पश्चिम मुख बैठकर दोनों
- पृ०सं० ४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पवित्र, आचमन एवं स्वस्तिवाचन करे।

- फलदान चढाने वाला व्यक्ति हाथ में फलदान की सामग्री सलेकर मन्त्र पढ़े।
    - **ॐ वाचा दत्ता मया कन्या पुत्रार्थम् स्वीकृतं त्वया।**
      कन्यावलोकन विधी निश्चितस् त्वं सुखीभव॥
    - **तुभ्यं कन्यार्थिने वाचा कन्यादानं ददाम्यहम्।**
      तन्निश्चयार्थम् मद्दतं गृह्यतां साक्षतं फलम्॥

- फलदान वर के हाथ में दे दे।
- वर फलदान लेकर निम्न मन्त्र पढ़े एवं माथे पर लगाये।
    - **ॐ वाचा दत्ता त्वया कन्या पुत्रार्थम् स्वीकृतं मया।**
      वरालोकन विधौ निश्चितम् त्वं सुखी भव॥

- **ध्यान**

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद विष्णु : परिपूर्णम् स्यादिति श्रुतिः॥
यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

- माता पिता आचार्य पुरोहित आदि गुरुजनों का चरण स्पर्श करे।
- ब्राह्मण को दक्षिणा और नाई को न्योछवर देना चाहिए।

॥ वर वरण / तिलक / सगाई विधि ॥

विवाह-संस्कार में वर और कन्या दोनों के संस्कार का विधान है। विवाह से पूर्व वरवरण होता है, जिसे लोकभाषा में तिलक या सगाई भी कहते हैं। इसमें मुख्य रूप से कन्यापक्ष द्वारा संकल्प पूर्वक 'वर' का पूजन तथा वरण किया जाता है।

किसी शुभ दिनमें कन्या के भ्राता-पिता आदि स्वजनों के साथ मांगलिक सामग्रीयों को लेकर वर के घर में जाकर मण्डप में पश्चिमाभिमुख बैठें और वर पूर्वाभिमुख बैठे। दोनों पक्ष मन्त्रपूर्वक पूजन आदि करे।

यथालब्धोपचार से गणेश-अम्बिका पूजन, कलश पूजन, नवग्रहों का पूजन करें।

- **पवित्रकरणम्** — **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।**
  यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

- **आचम्य** — **ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।** आचमन करें।
  ॐ हृषीकेशाय नमः। हाथ धो लें।

- **आसन शुद्धि** — **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥
  - **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥**

- **पवित्री (पैंती)** — **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूनेतच्छकेयम्॥**

- **यज्ञोपवित** — **ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।**
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः॥

- **तिलक** — **चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्।**
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा॥
  - **ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा।**
    विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु नः॥

- **रक्षाबन्धनम्** — **येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।**
  तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः॥
  - **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।**
    दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

- **स्वस्ति-वाचन** ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॥१॥

- देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ ॥२॥
- तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्रिधम् ।
अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ॥३॥
- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥ ४॥
- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॥ ५॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेवेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥ ६॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ॥ ७॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॥ ८॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥ ॥ ९॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥ ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॥१२॥

१. श्रीमन् महागणाधीपतये नमः ।
२. इष्ट देवताभ्यो नमः ।
३. कुल देवताभ्यो नमः ।
४. ग्राम देवताभ्यो नमः ।
५. स्थान देवताभ्यो नमः ।
६. वास्तु देवताभ्यो नमः ।
७. वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः ।
८. लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः ।
९. उमा महेश्वराभ्याम नमः ।
१०. शची पुरंदाराभ्याम नमः ।
११. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।
१२. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
१३. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
१४. एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ॥ १॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ॥ २॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ॥ ३॥
- शुक्लाम्बरधरम् देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नो-पशान्तये ॥ ॥ ४॥
- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
  सर्वविघ्न-हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॥ ५॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ॥ ६॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥ ॥ ७॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्ध्री युगं स्मरामि ॥ ॥ ८॥
- लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
  येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ ॥ ९॥
- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
  तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मम ॥ ॥१०॥
- सर्वेष्वारम्भ-कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
  देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ ॥१३॥
- वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि सम प्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॥१५॥

- **संकल्प (कन्या)** (अमुक) गोत्रोत्पन्नः (अमुक) शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोऽहं, (अमुक) गोत्रायाः, (अमुक) नाम्न्याः स्वभगिन्याः (पिता करे तो स्वकन्यायाः कहे) विवाहांगभूत वरपूजन पूर्वकं वरवरण कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थं गौरी-गणपति कलशस्थापनं नवग्रहादीनां स्मरणं पूजनं च करिष्ये ।

- **संकल्प (वर)** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे ..... नगरे/ ग्रामे/ क्षेत्रे ..... संवत्सरे, ... अयने, ... ऋतौ, ... मासे, ... पक्षे, ... तिथौ, ... नक्षत्रे, ... योगे, ... करणे, ... वासरे, ... राशिस्थिते सूर्ये, ... राशिस्थिते चन्द्रे, शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभमुहूर्ते ..... गोत्रः, ... शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोऽहं स्वकीय विवाहांगभूत वरवृत्ति कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थं गौरी-गणपति कलशस्थापनं नवग्रहादीनां स्मरणं पूजनं च करिष्ये ।

- **पृथ्वी ध्यानम्** ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- **रक्षा विधानम्** अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
  - अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषाम विरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥

- **दिप स्थापनम्** शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥
  - ॐ अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् ।
सहस्त्रदा ऽ असि सहस्त्राय त्वा ॥

- **सूर्य नमस्कार** ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

- **शंख पूजनम्** ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥
  - त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करें ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥

- **घंटी पूजनम्** आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ॥

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् ॥

- **गणेश ध्यानम्**

  ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥
  - **गजाननम् भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् ।**
    उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गणपतये नम: । गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

- **गौरी ध्यानम्**

  नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
  नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणताः स्म ताम् ॥
  - **ॐ हेमद्रितनायां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् ।**
    लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ॥
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।
  - पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

- **विशेषार्घ्य**

  एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।
  - **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।**
    भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
  - **द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।**
    वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥
  - **अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

- **अर्पण**

  ॐ एतानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवैद्य ताम्बूल पूगीफल दक्षीणा द्रव्येण अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

- **प्रार्थना**

  विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
  नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
  - **त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया ।**
    सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

॥ कलश पूजनम् ॥

- **भूमि स्पर्श** — ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सीः ॥

- **धान्य प्रक्षेप** — ॐ ओषधयः समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा ।
  यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ७ राजन् पारयामसि ॥ भूमि पर सप्तधान्य रखें

- **कलश स्पर्श** — ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः।
  सहस्रं धुक्क्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः॥ धान्य पर कलश रखें

- **कलश में जल** — ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऽऋत
  सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद ॥

- **कलश में आम्रपल्लव** — ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।
  ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ॥ कलश में आम का पत्ता रखें

- **कलश में सोपारी** — ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी ।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हसः ॥ कलश में सोपारी रखें

- **कलश में सूत्र** — ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्स्वः ।
  वासो अग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥ कलश में मौली लपेट दें

- **कलश में द्रव्य** — ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत ।
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कलश में दक्षिणा छोडें

- **कलश पर नारीयल** — ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ पूर्णपात्र पर नारियल रखें

- **कलश पर पूर्णपात्र** — कहीं पर नारीयल की जगह पूर्णपात्र (जव भरा पियला) एवं दीपक रखा जाता है।
  - ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
    वस्नेव विकृणावहा इषमूर्ज ७ शतक्रतो ॥ कलश पर पूर्णपात्र रखें ।

- **कलश पर दीपक** — ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
  अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
  ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ पूर्णपात्र के उपर दीपक रखें ।

- **कलश आवाहन** ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्रमोषीः॥
  - कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः ।
    मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र-गणाः स्मृताः ॥ ॥१॥
  - कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा ।
    ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ ॥२॥
  - अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
    अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ ॥३॥
  - आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः ।
  - गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
    नर्मदे सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥ ॥४॥
  - अस्मिन कलशे वरुणं सांड्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ।
  - ॐ भूभुर्वः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण ।
    ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।

- **कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्** कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें ।

▪ **पूर्व**	**ऋग्वेदाय नमः ।**	▪ **उत्तर**	**अथर्वेदाय नमः ।**
▪ **दक्षिण**	**यजुर्वेदाय नमः ।**	▪ **कलश के ऊपर**	**ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः ।**
▪ **पश्चिम**	**सामवेदाय नमः ।**		

  - पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

- **अर्पण** अनेन कृतेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ षोडश मातृका पूजनम् ॥



ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

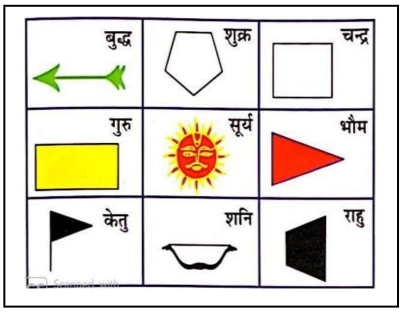
१. **ॐ गणपतये नमः** गणपतिम् आ.स्था.पू.।
२. **ॐ गौर्यै नमः** गौरीम् आ.स्था.पू.।
३. **ॐ पद्मायै नमः** पद्माम् आ.स्था.पू.।
४. **ॐ शच्यै नमः** शचीम् आ.स्था.पू.।
५. **ॐ मेधायै नमः** मेधाम् आ.स्था.पू.।
६. **ॐ सावित्र्यै नमः** सावित्रीम् आ.स्था.पू.।
७. **ॐ विजयायै नमः** विजयाम् आ.स्था.पू.।
८. **ॐ जयायै नमः** जयाम् आ.स्था.पू.।
९. **ॐ देवसेनायै नमः** देवसेनाम् आ.स्था.पू.।
१०. **ॐ स्वधायै नमः** स्वधाम् आ.स्था.पू.।
११. **ॐ स्वाहायै नमः** स्वाहाम् आ.स्था.पू.।
१२. **ॐ मातृभ्यो नमः** मातृः आ.स्था.पू.।
१३. **ॐ लोकमातृभ्यो नमः** लोलमातृः आ.स्था.पू.।
१४. **ॐ धृत्यै नमः** धृतिम् आ.स्था.पू.।
१५. **ॐ पुष्टयै नमः** पुष्टिम् आ.स्था.पू.।
१६. **ॐ तुष्टयै नमः** तुष्टिम् आ.स्था.पू.।
१७. **ॐ आत्मनः कुल देवतायै नमः**
आत्मननः कुल देवताम् आ.स्था.पू.।

- पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **प्रार्थना** **आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।**
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

- **अर्पण** अनया पूजया गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥



ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

ग्रहों के स्थापन किसी वेदी पर नौ कोष्ठकों का एक चौकोर मण्डल बनाये। बीच वाले कौष्ठक में सूर्य, अग्निकोण में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्य में राहु और वायव्य में केतु की स्थापना करें।

१. सूर्यम्

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

- **जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।**
  तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
  ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः। सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

२. चन्द्रम्

ॐ इमं देवाऽअसपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा॥

- **दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।**
  नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः। चन्द्रमसम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

३. भौमम्

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपा ७ रेता ७ सि जिन्वति॥

- **धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।**
  कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः। भौमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि

४. बुधम्

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथा मयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

- **प्रियंगु कलिका श्यामं रुपेण प्रतिमं बुधम्।**
  सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः। बुधम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. **बृहस्पतिम्**

ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

- **देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।**
  बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः। बृहस्मतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

६. **शुक्रम्**

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः।
ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु॥

- **हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।**
  सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः। शुक्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

७. **शनिम्**

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः॥

- **नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।**
  छाया मार्तण्ड संभूतं तन्नमामि शनैश्चरम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय नमः। शनैश्चरम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि

८. **राहुम्**

ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

- **अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।**
  सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः। राहुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

९. **केतुम्**

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

- **पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।**
  रौद्रं रौद्रत्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः। केतुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **अर्पण**

ॐ एतानि गन्धाक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवैद्य-ताम्बूल-पूगीफल दक्षिणा द्रव्येण अनेन पूजनेन नवग्रहाधि देवता प्रीयन्ताम् न मम।

- **प्रार्थना**

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सदबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥

- **प्राणप्रतिष्ठा**

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७
समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥

- अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥

- **आह्वान**

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥

- आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव ॥ आह्वान हेतु पुष्प चढायें।

- **आसन**

ॐ पुरुषऽएवेदं ७ सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उताम् तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥

- रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ आसन हेतु अक्षत चढायें।

- **पाद्य**

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि ॥

- उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षाल नार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम् ॥ पाद्य हेतु जल अर्पण करें।

- **अर्घ्य**

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष: पादोऽ स्येहा भवत्पुन:।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥

- अर्घ्य गृहाण देवश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्य नमोस्तु ते ॥ अर्घ्य हेतु जल, गन्धाक्षतपुष्प छोडे।

- **आचमनीयम्**

ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः।
स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुर: ॥

- सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥ आचमन हेतु जल अर्पण करें।

- **स्नान**

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुत: सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

- गंगा सरस्वती तीरे पयोष्णी नर्मदा जलै:।
स्नापितोसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥ स्ना हेतु जल अर्पण करें।

- **पंचामृत स्नानम्** ॐ पंच नद्यः सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥
  - पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥ पंचामृत से स्नान करायें ।

- **शुद्धोदक स्नानम्** ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विना:। श्वेत: श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥
  - ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरंशुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जल से स्नान करायें ।

- **वस्त्रम्** ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥
  - ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
मयो पपादि ते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ वस्त्र चढायें ।

- **यज्ञोपवीतम्** ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽ अजावयः ॥
  - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ यज्ञोपवीत पहनायें ।

- **चंदनम् (गन्धम्)** तँ यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषन् जातमग्रतः ।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥
  - श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ चन्दन चढायें ।

- **अक्षतम्** ॐ अक्षन्न मीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधुषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान् नविन्द्रतेहरी ॥
  - अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता : ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ चावल चढायें ।

- **सुगन्धित तैल** (इत्र) ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्द्धनम ।
उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥
  - ॐ चम्पकाशोकवकुल मालती मोगरा दिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारु प्रगृह्यतां ॥ इत्र चढायें ।

- **पुष्प / पुष्पमालाम्** ॐ ओषधी: प्रतिमोदद्धवं पुष्पवती: प्रसूवरी: ।
  अश्वाऽ इव सजित्त्वरीर्वीरुध: पारयिष्णव: ॥
  - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
    मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ पुष्प चढायें ।

- **सौभाग्य द्रव्यम्** ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमान: ।
  हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ७ सं परिपातु विश्वत: ॥
  - अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च ।
    अबीरेणर्चितो देव अत: शान्ति प्रयच्छमे ॥ अबीर-गुलाल चढायें ।

- **धुपम्** ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वाम: ।
  देवानामसि वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
  - ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध: उत्तम: ।
    आघ्रेय: सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धुप दिखायें ।

- **दीपम्** ॐ अग्निर्ज्योति: ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा ।
  अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्च: स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्च: स्वाहा ।
  ज्योति: सूर्य्य: सूर्य्योज्योति: स्वाहा ॥
  - साज्यं च वर्ति संयुक्तम् वह्निना योजितम् मया ।
    दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ दीप दिखायें ।

- **नैवद्यम्** ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत ।
  पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥
  - शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च ।
    आहारं भक्ष्य भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रति गृह्यताम ॥ प्रसाद चढायें ।

  प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा ॥

- **ताम्बूलम्** ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
  वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ॥
  - ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
    एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ पान-सुपारी चढायें ।

- **दक्षिणा** ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् ।
  स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
  - हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो:।
    अनन्त पुण्य फलद मत्त: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ दक्षिणा चढायें ।

- **कपूर आरती** **ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ रजः पितुरप्रायि धामभिः।**
  दिवः सदा ७ सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः॥
  - **इद ७ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये।**
    आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनिः।
    अग्निः प्रजां बहुलं मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽ अस्मासु धत्त॥
  - **अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,**
    वसवो देवता रुद्रा देवता, दित्या देवता मरुतो देवता,
    विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥
  - **कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।**
    सदा बसन्तं हृदया रबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

- **ब्राह्मण-वरण** वर तथा कन्या भ्राता ब्राह्मण के माथ में तिलक-अक्षत लगा कर वरण करे।
  - **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम्।**
    ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥

- **संकल्प वरण** **ॐ अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मिन् वरवृत्ति कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् अमुक गोत्रं अमुक नामकं शर्माणं त्वामहं वृणे।**
  - ब्राह्मण वरण लेकर कहे। **ॐ वृतोऽस्मि।**

॥ वर पूजन ॥

- कन्या का भ्राता आदि निम्न रीति से वर का पूजन करे।

- **पाद प्रक्षालन** कन्या का भाई अथवा पिता वर का पाद प्रक्षालन करे।
  - मन्त्र **ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥**
  - **ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।**
    सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

- **तिलक** वर को दधि रोचनादि से तिलक लगाये।
  - **कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षःस्थले कौस्तुभं,**
    नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
    सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
    गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः ॥

- **अक्षत** (वर) **ॐ अक्षन्न-मीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।**
  अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

- **माल्यार्पण** (वर) **ॐ याऽऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय।**
  ताऽअहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ॥
  - **ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु।**
    तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि ॥

- कन्या का भ्राता वर के वरण हेतु थाल में यज्ञोपवीत, हरिद्रा, सुपारी, फल, नारियल, वर के वस्त्र और वरण-द्रव्य के साथ संकल्प करे।

- **वरवरण संकल्प** **ॐ अद्य पूर्वोच्चारित ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ (अमुक) गोत्रः, (अमुक) नामाऽहं, स्वभगिन्याः (कन्यायाः) (अमुक) गोत्रायाः (अमुकी) नाम्याः विवाहांगभूत वर-वरण कर्मणि (अमुक) गोत्रम्, (अमुक) नामकम् वरं सुपूजितमेभिः कुंकुमाक्त तण्डुल पूरित पात्र चन्दन, नारिकेल, पूगीफल, हरिद्रा, दूर्वा वस्त्रादिभिः यथाशक्ति द्रव्यैश्च त्वामहं वृणे।**

- वर सामग्री लेकर कहे **वृतोऽस्मि। ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।**

  - कन्या भ्राता व वर एक दूसरे को पान खिलावें और गले मिलें। और कहे कि **रुचन्नोधिहि।**
  - वर के पुरोहित लग्नपत्री गणेश जी को छुआकर खोलें और पढकर सुनावें।

- **विसर्जन** कन्या का पिता एवं वर हाथ में अक्षत लेकर आवाहित देवताओं का विसर्जन करें।
  - **ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।**
    इष्टकाम समृद्धयर्थ पुनरागमनाय च ॥

- **अभिषेक** **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे-ऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।**
  अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भैषज्येन
  वीर्य्यायान्नाद्याया भिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रिये यशसेभिषिञ्चामि ॥
  पालाशम् भवति बह्मणोऽभिषिञ्चति ब्रह्मपालाशो त्रह्मणैवमेतदभिषिञ्चति।
  यद्वै विकल्पं जुहोति प्राणा वैकल्पं जुहोति ॥ प्राणवैकल्पा अमृतमुवै प्राणा
  अमृतेनैवेनमेतदभिषिञ्चति। सर्वेषां वायेषदेवाना ७ रसेनाभिषिश्चति ॥

- **दक्षिणा संकल्प** कन्या के भाई या पिता तथा वर आचार्य दक्षिणा एवं भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे।
  - **ॐ कृतस्य वर-वृत्ति ग्रहण कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थं आचार्य दक्षिणां तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त-दोष परिहारार्थं नाना-नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां च विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।**

- **भोजन संकल्प** वरपक्ष ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे।
  - **ॐ अद्य (अमुक) गोत्रः, (अमुक) नामाऽहं वर-वृत्ति ग्रहण कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं यथा सङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**

- **आशीर्वाद** **ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्। पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः ॥**
  घृतेनत्वन्तन्वंवर्द्धयस्व, सत्यास्सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
  श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमा- रोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
  धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः ॥
  मन्त्रार्थोः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
  शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

- **भगवत्स्मरण** **प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।**
  स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
  यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
  न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
  ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

॥ इति फलदान विधि ॥

॥ मण्डप (खम्भा) स्थापन ॥

- विवाह के दिन अथवा विवाह के पूर्व किसी श्रेष्ठ दिन गृह के मध्य (आँगन) में कन्या के या वर के हाथ से सोलह, बारह या दस अथवा आठ हाथ का (जितना हो सके) एक विवाह-मण्डप बनाना चाहिये।
- मण्डप के चारों कोणों में आग्नेयादि क्रम से चार स्तम्भों का रोपण करे और मध्य में एक स्तम्भ का रोपण करे देशाचार के अनुसार मध्य के स्तम्भ के साथ कदली स्तम्भ इत्यादि का रोपण किया जाता है।
- कन्या के घर में कन्या-पिता। वर के घर में वर-पिता ऑगन में जहां खम्भा गाड़ना है उस स्थान पर पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाय।
- पृ०सं० ३३ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पवित्र, आचमन एवं स्वस्तिवाचन करे के मण्डप स्थापन हेतु संकल्प करे।

- **संकल्प** — **अद्य ॐ विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ अमुक नामाऽहमु स्वपुत्रस्य (कन्यायाः) करिष्यमाण विवाहांगभूत स्तम्भारोपणं तत्र पूर्वे निर्विघ्नता सिध्यर्थं गणपत्यादि पूजनमहं करिष्ये।**

  - पृ०सं० ८ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार गौरी गणेश और कलश की पूजा करे।

- **भूमि स्पर्श** — जहाँ खम्भा गाडना है। उस भूमि का स्पर्श करे।
  - **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।**
    पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सीः ॥
  - **ॐ विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता।**
    उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥

- **गढा खोदें** — खम्भा गाड़ने के लिए गढ़ा खोदे।
  - **ॐ भावो रिषखनिता यस्मै चाऽहं खनामिवः।**
    द्विपाच्चतुष्पाद स्भाक ७ सर्वभस्त्वना तुरम् ॥

- **प्रार्थना** — गढ़े के भीतर जल-अक्षत-खड़ी हल्दी-सुपारी तथा द्रव्य छोड़कर प्रार्थना करे।
  - **ॐ सर्वबीज समायुक्ते सर्वरत्नौषधी वृते।**
    रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे रम्यता मिह ॥
  - **तवोपरि करिष्यामि मण्डप सुमनोहरम्।**
  - **क्षन्तव्यं च त्वया देवि सानुकूला मखे भव।**
    निर्विघ्नं मम कर्मेदं यथा स्यात्त्वं तथा कुरु ॥

- **प्रार्थना** गेरु से रँगा हुआ हरीश एवं हरा बाँस दोनों सामने रखकर उसकी प्रार्थना करे।
  - **ॐ स्तम्भस्त्वं निर्मितः पूर्वम् यज्ञभाग सुरेश्वरः ।**
    स्तुतो मण्डप रक्षार्थम् पूजां पुष्पादिकं तथा ॥
    गृहीत्वा सुस्थिरो भूत्वा अस्माकमुदयं कुरु ॥

  - उस खम्भे पर जल चढ़ावे और ऐपन का ५ छापा व सिन्दूर लगावे।
  - ५ आदमी मिलकर खम्भा उठावें और उसी गड्ढे में स्थिर कर दे।

- **स्तम्भ गाड़े** **ॐ स्थिरो भव वीडवड़ आशुर्भवम् वाज्र्यवम् ।**
  पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः ।

- स्तम्भों में आग्नेयादि क्रम से मण्डप की पाँच मातृकाओं का आवाहन एवं गन्धाक्षत-पुष्पादि द्वारा पूजन करे।

१. अग्निकोण (पूर्व-दक्षिण) में	ॐ नन्दिन्यै नमः।	नन्दिनीम्	आ०स्था०पू०।
२. नैऋत्यकोण (दक्षिण-पश्चिम) में	ॐ नलिन्यै नमः।	नलिनीम्	आ०स्था०पू०।
३. वायव्यकोण (पश्चिम-उत्तर) में	ॐ मैत्रायै नमः।	मैत्राम्	आ०स्था०पू०।
४. ईशानकोण (उत्तर-पूर्व) में	ॐ उमायै नमः।	उमाम्	आ०स्था०पू०।
५. मध्य में	ॐ पशुवर्दिधिन्यै नमः।	पशुवर्द्धिनीम्	आ०स्था०पू०।

- **प्रार्थना** खम्भा गाड़ने के बाद फिर से उसके ऊपर जल अक्षत छोड़कर प्रार्थना करे।
  - **ॐ त्वां प्रार्थये ह्यहं स्तम्भ लोकानां शान्तिदायक।**
    देहि मेऽनुग्रहम् स्तम्भ प्रसीद कुरु सुप्रमो ॥

  - पुरोहित को दक्षिणा तथा नाई को न्यौछावर दे।
  - घर की कोई सुमंगली स्त्री गाड़ने वाले पाँचो व्यक्तियों के पीठ पर छापा लगावे।
  - घर के लोग मिलकर मण्डप बनावें और सरपत से छावें।

॥ कलश स्थापन ॥

- मण्डप छा लेने के बाद जहाँ खम्भा गड़ा है वहीं पर खम्भा के पास पश्चिम की ओर प्रधान कलश के लिये १ घड़ा जिसमें गोबर और जवा लगा होता है, रखना चाहिये।
- घड़े में गोबर और जवा लगाने का काम तथा कोहबर बनाने का काम जिसका विवाह हो रहा है, उसकी बुआ को करना चाहिये।
- कलश में जल, खड़ी हरदी, सुपारी, द्रव्य और आम की पत्ती छोड़कर उसके ऊपर जव से भरा एक पियाला रखे। उस पर चकरी के दिन जो दिया बनाया गया था, वही दिया जलाकर रखे।
- कलश के आगे चकरी बाले दिन बनाई गई गौर-सुपारी रखे।
- जिसका विवाह हो रहा है उसके माता-पिता पूर्व की ओर मुँह करके गौर गणेश कलश की पूजा करें
- पृ०सं० ४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पवित्र, आचमन एवं स्वस्तिवाचन करे।

- **संकल्प** **अद्य अमुक गोत्रः अमुक नाम स्व (पुत्रस्य / कन्यायाः) करिष्यमाण विवाहांग भूतं कलश स्थापनं पूजनं, मातृका पूजनं, नान्दीमुखश्राद्धादिकं च कर्माहं करिष्ये।**

- पृ०सं० ८ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार गौरी गणेश और कलश की पूजा करे।

॥ तेल / हरिद्रालेपन / ककण बन्धन ॥

• तेल / हरिद्रा लेपन विधि

- विवाह के लिये निर्धारित तिथि से पूर्व तीसरे-छठे और नौवें दिन को छोड़कर किसी शुभ दिन में कन्या तथा वर के घर में तेल, हरिद्रालेपन एवं कंकण बन्धन करने की परम्परा है। जो महिलाएँ लोकरीति के अनुसार इस विधि को पूरा करती हैं।
- वर या कन्या के हाथ में चावल, गुड़, सिन्दूर की डिबिया रखकर कोहबर से मण्डप में ले आवें।
- वर-कन्या अपने-अपने घर में पूर्वाभी मुख बैठकर **पृ०सं० ३३** में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पवित्र, आचमन, स्वस्तिवाचन आदि करके गणेशाम्बिका और अविघ्न कलश का यथालब्धोपचार से पूजन कर लें।
- कलश पर (अक्षतपुंजपर) मोदादि षड्विनायकों (मोद, प्रमोद, सुमुख, दुर्मुख, अविघ्न तथा विघ्नकर्ता) का भी पूजन करे तथा दीपक प्रज्वलित करे।

- वर और कन्या के कुलपुरोहित द्वारा दूब की दो पिंजुली दोनों हाथों में लेकर उन्हें हल्दी और तेल में डुबोकर सर्वप्रथम गणेशजी को तदनन्तर कलश पर एक बार हरिद्रा और तेल चढ़ाना चाहिये।
- ५ कुमारी कन्याएँ वर अथवा कन्या को ५-५ बार हल्दी और तेल लगावें।
- तेल चढ़ाने के समय वर या कन्या के हाथ में गुड़ चावल सिन्दूर की डिबिया रख दे।
- तेल
  दोनों पैर की अँगुलियों में,
  पैर के घुटने में,
  हाथ की कलाई और घुटने में,
  दोनों कन्धों पर और
  माथ में लड़कियों को ५-५ बार छुवाना चाहिए।
- पाँचों जगह छुवाकर दूब को चूमना चाहिए।
- लड़कियाँ तेल चढ़ा लें तो हाथ का चावल-गुड़ पाँचों कन्या को अलग-अलग देना चाहिए।

• तेल चढ़ाने का मन्त्र

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥

- इसके बाद नाइन या सोहागवती स्त्री तेल को मल दे।

कंगन / कंकण विधि

- वर तथा कन्या के स्नान के बाद दोनों के कुलपुरोहित मन्त्रों के द्वारा माथेपर तिलक, अक्षत लगायें।

- **तिलक** **युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि॥**
- **अक्षत** **अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।**
  अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥

- ५ पीले कपड़े के टुकडें में राई, कौडी, लोहे के छल्ले को नारे में बाँधकर कंगन बनालें।
- १ वर के दाहिने हाथ में तथा कन्या के बायें हाथ में बाँधे। बाकी ४ में से १ खम्भा में, १ कलश में, १ पीढा में, १ पूजाजल पात्र में बांधना चाहिए।

- **कंकणबन्धन** **यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्य मानाः।**
  तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्॥

- ब्राह्मण को तेल-कंगन की दक्षिणा और नाई को न्यौछावर दे।

- **संकल्प दक्षिणा** **कृतैतद् हरिद्रालेपन कर्मणः साङ्गत्ता सिद्ध्यर्थम् आचार्याय यथोत्साहां दक्षिणां दातुमहमुत्स्ज्ये।**

- **संकल्प** भूयसी दक्षिणा **कृतैतद् हरिद्रालेपन कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थम् तन्मध्ये न्यून अतिरिक्त दोष परिहारार्थं नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।**

- **संकल्प भोजन** **कृतैतद् हरिद्रालेपन कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थम् यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**

- कन्या या वर के हाथ में सिन्दूर की डिब्बी देकर उसे कोहबर में ले जाय और उसे दही-बताशा खिलावे।
- कोहबर में ले जाते समय जल की धार देता रहे।

॥ पून पुनौती ॥

- सिल पोहने के पहले कन्या या वर की माता ५ सोहागवती स्त्रियों के साथ जाकर कुओं या तालाव या नदी पूजें, मिट्टी खोदें और अपने आँचल में थोड़ी सी मिट्टी लेती आवें।
- मण्डप में माता आकर पश्चिम मुख खड़ी हो।
- कन्या पिता अथवा वर पिता को पूर्व मुख खड़ा कर उसके दुपट्टे में उस मिट्टी को ५ बार अदला-बदली करे।
- इसी को पून-पुनौती कहते हैं।
- इसी मिट्टी से विवाह के लिए पिहानी या चूल्हा बनाना चाहिए।

॥ सिल पोहना ॥

- माता-पिता दोनों मण्डप के नीचे कलश के उत्तर आमने-सामने बैठ कर गाँठ बाँधकर सिल पोहें।
- २ सिल, २ लोढ़ा सामने रखकर दोनों का ऊपरी हिस्सा मिला दे।
- सिल लोढ़े पर ५-५ जगह ऐपन, सेंदुर लगावें। अक्षत-गुड़ रखें।
- उरद और चने की भीगी हुई दाल थोड़ी-थोड़ी दोनों सिल पर रखकर पीसे।
- दाल पीसते समय दोनों के ऊपर चुनरी या पीली धोती डाल दे।
- ५ बार पीसकर दोनों उठें और घूमकर एक-दूसरे के सिल पर जा-जाकर दाल पीसें।
- घूमते समय लोढ़ा नहीं छोड़ना चाहिए, एक-दूसरे के लोढ़े को पकड़ लेना चाहिए।
- इसी तरह ५ बार घूमें। बाद में दोनों सिल की दाल एक पर रखकर पत्नी को पीसना चाहिए।
- पीसने के बाद चुनरी हटाकर दोनों कलश के सामने बैठकर देव-पितरों की पूजा करें।

॥ मन्त्री / मातृका पूजन ॥

- सिल पोहने के बाद दोनों पति-पत्नी कलश के सम्मुख पूर्व की ओर मुँह करके बैठें और मातृका पूजन करें।

- वन्दनवार पूजन — आम्रपल्लव का वन्दनवार सामने रखकर जल से सिंचित करें। ऐवं सिंदुर अक्षत फूल चढ़ाकर द्वार तथा मण्डप में बाँधने के लिए नाई को दे दें।
  - **ॐ धात्र्यै नमः। धात्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।**
  - **ॐ विधात्र्यै नमः। विधात्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।**

- तृण मातृका पूजन — सरपत की ५ तिकोनी तिपखी बनवाकर उसे मौली से बाँधे और उस पर गोबर की २-२ पिण्डी लगाकर आवाहन एवं पूजन करें। एवं पाँचो खम्भे में बाँध दें।
  - **ॐ वासिष्ठी नन्दिनी नन्दा वसुदेवा च भार्गवी।**
    जया च विजया चैव सप्तैतास् तृणमातरः॥

- मण्डप मातृका पूजन — मण्डप में चारों ओर जल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प छिड़क कर पूजा कर दे।
  - **ॐ नन्दिनी नलिनी मैत्री उमा च पशुवर्द्धिनी।**
    आग्नेयादि क्रमेणैताः पंच मण्डप मातरः॥

- स्थल मातृका पूजन — कलश के पास एक पियाला रखकर उसमें अक्षत छोड़ते हुए स्थल मातृका का आवाहन एवं पूजन करें।
  - **ॐ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।**
    वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डाः स्थल मातरः॥

- कोहबर की पूजा
  - कोहबर ऐसी दीवाल में बनानी चाहिए कि कन्या-वर के बैठने पर शुक्र पीछे पड़े। अर्थात् यदि शुक्र पूर्व में है तो पश्चिम की ओर कन्या-वर का मुँह रहेगा।
  - जहाँ कोहबर बनाना हो, १ हाथ लम्बी और १६ अंगुल चौड़ी जगह को गेरू से रँग दें।
  - बीच में गोबर की १७ पिण्डी लगा दें।
  - द्वार पर कोहबर के बाहर दरवाजे पर दोनों ओर ८ अँगुल लम्बी ६ अँगुल चौड़ी जगह गेरू से रंग कर दाहिनी ओर ७, बाँयी ओर ५ गोबर की पिण्डी लगावें।
  - कहीं कहीं दाहिनी ओर ३ और बाँयी ओर २ ही पिण्डी लगती है।

- द्वार मातृका पूजन — सर्व प्रथम गुप्तागार के द्वार के दक्षिण की तरफ अक्षतों द्वारा तीन द्वार मातृकाओं का आवाहन एवं पूजन करे।

१. **ॐ जयन्त्यै नमः। जयन्तीम्** आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।
२. **ॐ मङ्गलायै नमः। मङ्गलाम्** आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।
३. **ॐ पिङ्गलायै नमः। पिङ्गलाम्** आवाह्यामि स्थापयामि, पूजयामि।

- तदनन्तर द्वार के बायीं ओर दो मातृकाओं का आवाहन एवं पूजन करे।

१. **ॐ आनन्दवर्धिन्यै नमः। आनन्दवर्धिनीम्** आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।
२. **ॐ महाकाल्यै नमः। महाकालीम्** आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- मन्त्र — **जयन्ती विजया नामा शोभना पिंगला तथा।**
  भद्रकाली प्रपूज्या वै पंचैता द्वारमातरः॥

- षोडश मातृका पूजन — कोहबर कक्ष में जाकर दीवार पर बनाइ गई गोबर की १७ पिण्डी पर गणेश-गौर्यादि षोडश मातृकाओं की स्थापना एवं पूजन करें।

- मन्त्र — **गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।**
  देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
- **धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।**
  गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥
- पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार पूजन कर दें।
- अर्पण — अनया पूजया गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

- सप्तघृत मातृका पूजन (घृत धारा करण)

- षोडश मातृकाओं के उत्तर भाग में दीवार पर रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर 'श्रीः' लिखे। इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिण से करके उत्तर की ओर दे। इसी प्रकार सात बिन्दु क्रम से चित्रानुसार बनाना चाहिये।
- नीचेवाले सात बिन्दुओं पर घी या दूध से धार दे।
- लोकाचार पति-पत्नी दोनों अपने-अपने बाल कोहबर दीवाल में छुवा दें और नाउन घी की धार दे।

- मन्त्र — **ॐ वसोः पवित्र मसि शतं धारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्र धारम्।**
  देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

- गुड़ लेकर उस घी की धार पर चिपका दें।
- एवं प्रत्येक मातृका का आवाहन और स्थापन करे।

१. ॐ श्रियै नमः। श्रियम्
२. ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम्
३. ॐ धृत्यै नमः। धृतिम्
४. ॐ मेधायै नमः। मेधाम्
५. ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टिम्
६. ॐ श्रद्धायै नमः। श्रद्धाम्
७. ॐ सरस्वत्वै नमः। सरस्वतीम्

- इसके बाद अक्षत लेकर कोहबर में सब जगह अक्षत छोड़ें दे।

- **कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधापुष्टिः श्रद्धाक्रियाः मतिः।**
  बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिः स्तथैव च ॥ ॥ १ ॥
- **गृह मातर एतास्तु शुभं पूज्याश्चतुर्दश।**
  मोदा चैव प्रमोदा च सुमुखा दुर्मुखा तथा ॥ ॥ २ ॥
- **अविघ्ना विघ्नहर्त्रीच षडैताऽविघ्नमातरः।**
  मत्सी कूर्मी च वाराही मांडुकी दर्दुरी तथा ॥ ॥ ३ ॥
- **जलौकी सोमपा चैव सप्तैता जल मातरः।**
  क्षमा सत्या च सीता च पार्वती भुवनेश्वरी ॥ ॥ ४ ॥
- **पद्माक्षी पद्मवदना सप्तैता मध्यमातरः।**
  कल्यानि प्रयच्छन्तु सकुटुम्बस्य मे सदा ॥ ॥ ५ ॥

- घी-गुड़ की अग्यारी कर। हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।
  - प्रार्थना **श्री लर्क्ष्मी धृतिः मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती।**
    मँगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृत मातरः ॥
  - **ॐ यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।**
    कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥
  - अनया पूजया वसोर्धारा देवताः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ देव-पितृ निमन्त्रण ॥

- मण्डप में पूर्वमुख बैठ कर सामने पीली हल्दी से रँगी हुई २ करई तथा २ पियाला रख ले।
- १ करई को १ पियाले से बायें हाथ से आधा ढँक ले। करई का आधा मुख खुला रहे।
- यजमान दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत छोड़ता रहे। ब्राह्मण मन्त्र पढ़े-

१. ॐ गौर्ये नमः। गौरीम् निमंत्रयामि।
२. ॐ गणत्यादि, पंचलोकपाल, इन्द्रादि दशदिक्पाल, अधि-प्रत्यधि सहित सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
३. ॐ स्कन्दादि बालग्रहेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
४. ॐ सर्वेभ्यः पंचाशत क्षेत्रपाल, चतुःषष्टि योगिनी, एकाशीति वास्तुदेवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
५. ॐ स्वेष्टकुल देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
६. ॐ स्वेष्ट देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निरंत्रयामि।
७. ॐ स्व-वास्तु देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
८. ॐ स्व-ग्राम देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
९. ॐ स्व-क्षेत्र देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
१०. ॐ त्रयस्त्रिंशत कोटि संख्यकेभ्यो देवेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
११. ॐ सर्वेभ्यः चतुर्दश-लोकेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
१२. ॐ सर्वेभ्यो द्वात्रिंशत् कल्पेभ्यो नमः। एतान् स्वान् निमंत्रयामि।
१३. ॐ सर्वेभ्यो मन्वन्तरेभ्यो नमः। एतान् सर्वान् निमंत्रयामि।
१४. ॐ सर्वेभ्यो युग-काल-समय-सम्वत्सर-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथि-नक्षत्र योग-करण-लग्न मुहूर्त-राशि-दिवसेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
१५. ॐ सर्वेभ्यो द्वात्रिंशत संख्यकेभ्यो रात्रि-दिवस मुहूर्तेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
१६. ॐ सर्वाभ्यो वीथीभ्यो नमः। सर्वाः एताः निमंत्रयामि।
१७. ॐ सर्वेभ्यो पंचक्रोशी-नवखण्डेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
१८. ॐ सर्वेभ्यो द्वीपेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
१९. ॐ सर्वेभ्यो सागरेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
२०. ॐ सर्वाभ्यो नदीभ्यो नमः। सर्वाः एताः निमंत्रयामि।
२१. ॐ सर्वेभ्यः पर्वतेभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
२२. ॐ सर्वेभ्योऽरण्येभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
२३. ॐ सर्वाभ्यः पुण्यपुरीभ्यो नमः। सर्वाः एताः निमंत्रयामि।
२४. ॐ सर्वेभ्यो वनस्पतिभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।
२५. ॐ सर्वेभ्यो अष्टनिधिभ्यो नमः। सर्वान् एतान् निमंत्रयामि।

२६. ॐ सर्वेभ्य: कश्यपादि ऋषि-प्रजापति-मनु पुत्र-विश्वेदेव-आदित्य-रुद्र-अष्टवसु-देवगणेभ्यो नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।

२७. ॐ सर्वाभ्य: लोकमातृभ्यो नम: । सर्वा: एता: निमंत्रयामि ।

२८. ॐ सर्वाभ्य: अरुन्धती-आदि धर्मपत्नीभ्यो नम: । सर्वा: एता: निमंत्रयामि ।

२९. ॐ सर्वाभ्य: षोडश मातृभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

३०. ॐ सर्वाभ्य: घृतमातृ-स्थलमातृ तथा चान्यमातृभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

३१. ॐ सर्वाभ्य: सुषुप्तादि अवस्थाभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

३२. ॐ सर्वेभ्य: सत्त्व-रजादि गुणेभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

३३. ॐ सर्वेभ्यो हरिकेशादि सूर्यरश्मि-गायत्री- आदि छन्द-निरुक्तादि स्वरेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

३४. ॐ सर्वेभ्य: पंचतत्त्वेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

३५. ॐ सर्वेभ्य: त्रैलोक्यस्थ चराचर भूतेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

- इतना पढ़कर करई को पियाले से पूरा ढँक दे ।
- स्त्री को दे दे और स्त्री जो दाल पीसी है, उसी पीठी से अच्छी तरह उसे बन्द कर दे ।
- ऊपर से ऐपन-सेंदुर लगा दे ।

- दूसरी करई फिर उसी तरह लेकर आधा मुँह ढँक कर २-२ दाना अक्षत छोडे । ब्राह्मण मन्त्र पढ़े-

१. सर्वेभ्य: मेघ-पुष्करादि पर्जन्येभ्यो नम: । एतानु सर्वान् निमंत्रयामि ।

२. ॐ सर्वेभ्य: समानादि वायुभ्यो नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।

३. ॐ सर्वेभ्य: पशुभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

४. ॐ सर्वेभ्यो मीनक-पिप्पलादि दंशशील जीवेभ्य: तथा च रोमज-पोतज पिच्छलादि जलद स्वेदज जीवेभ्य: एवं च मीना-माता जलौकादि-जलजन्तु जीवेभ्य: शेष-वासुकी-धनंजयादि नागेभ्य: हरिषेणसुषेणादि- किन्नरेभ्य: चित्रसेन- उग्रसेनादि गन्धर्वेभ्यश्च नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि |

५. ॐ पूर्णभद्र-हेमरथादि गुह्यकेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

६. ॐ सूर्य तेज सुमन्ददि यक्षेभ्यो नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।

७. ॐ सर्वाभ्य: तिलोत्तमा-उर्वशी मेनका-वसुमती-आदि अप्सराभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

८. ॐ सर्वेभ्यो यातुधान-जम्बुकादि राक्षसेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

९. ॐ पूतना-भद्रकादि राक्षसीभ्यो नम: । एता: सर्वा: निमंत्रयामि ।

१०. ॐ शंकुकर्णादि दानवेभ्यो नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।

११. ॐ शतगाल-कालनामादि असुरेभ्यो नम: । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

१२. ॐ छगल-वक्रादि पिशाचेभ्यो नम: । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।

१३. ॐ आवेशक-निवेशक-कालयवनादि भूतगणेभ्यो नमः । एतानु सर्वान् निमंत्रयामि ।
१४. ॐ सर्वेभ्यो मरुद्-गणेभ्यो नमः । सर्वान् एतान् निमंत्रयामि ।
१५. ॐ सिकता-पृश्निज-अज-श्रृंगिन-उपहूत-वसदस्यु-पुरुकुत्स-सौम्य-पंचाब्द-वैराजादि पितर गणेभ्यो नमः । एतान् पितृ गणान् निमंत्रयामि ।
१६. ॐ पैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।
१७. ॐ मद् हस्ताधिकारिभ्यः समस्त देव-पितृगणेभ्यो नमः । एतान् सर्वान् निमंत्रयामि ।

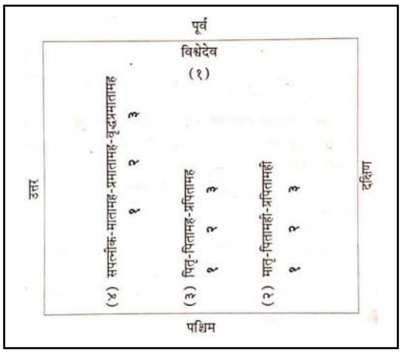
- इतना पढ़कर इस करई को भी पियाले से बन्द कर बगल बैठी पत्नी को दे।
- पत्नी पीठी से करई को बंद कर ऐपन-सिन्दुर लगा दे ।

- प्रार्थना

अमूर्तानां समूर्तानां पितृणां दीप्त तेजसाम् ।
नमस्यामि सदातेभ्यो ध्यानिभ्यो योगचक्षुषः ॥

- इन्द्रादीनां जनयितारो भृगुमारीचयोस्तथा ।
सप्तर्षीणां पितृणां चैव तान् नमस्यामि कामदान् ॥
- मन्वादीनां सुरेशानां सूर्याचन्द्रमसोस्तथा ।
तान् नमस्कृत्य सर्वान्वै पितृन् कुशल दायकान् ॥
- नक्षत्राणां चरादीनां पितृनय पितामहान् ।
द्यावा-पृथिव्योश्चैव तथा नमस्यामि कृतांजलिः ।
- देवर्षीणां जनयितांश्च सर्वलोक नमस्कृतान् ।
अभयस्य सदा दन्न नमस्येऽहं कृतांजलिः ॥
- प्रजापतये कश्यपाय सोमाय वरुणाय च ।
योग योगेश्वरेभ्यश्च नमस्यामि कृतांजलिः ॥
- पितृगणेभ्यः सप्तेभ्यो नमो लोकेषु सप्तसु ।
स्वयं भुवे नमश्चैव ब्रह्मणे योग चक्षुषे ॥
- देव दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ।
ऋषयो मुनयो गावो देव मातर एव च ॥
- योगिनः क्षेत्रपालाश्च सर्वे यत्र समागताः।
नगरे वाथ ग्रामे वा अटव्यां सरितस्तथा ॥
- त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टाः शुभं कुर्वन्तु मे सदा ॥
- शरणागतोऽस्म्यहं तेषां सर्वे ते मम सुप्रदाः ।
पूजां गृह्णीत मद्दत्तां सर्वदा मे प्रसीदत ॥
- सर्वकार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च घ्नन्तु मे सदा ।
सर्वे वैवाहिके रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ॥
- फूल दोनों करई के ऊपर छोड़ दे ।

॥ आभ्युदयिक नान्दीमुख श्राद्धम् ॥



न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम च चोच्चरेत् ।
न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः ॥
न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्र विवर्जितम् ।
अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित् ॥

- १ पत्तल में ऐपन से ४ खाना बनाकर सामने रखे।
- पूर्वाभिमुख सव्य रहकर ही पितरों की अर्चना करने का विधान है।

- **संकल्पः** **ॐ अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् मम पुत्रस्य (कन्यायाः) कर्त्तव्य माण विवाहांग विधौ नान्दीमुख श्राद्धमहं करिष्ये ।**

- **पादप्रक्षालनम्** पाद प्रक्षालन हेतु आसन पर जल छोड़े।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नांदिमुखः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।

२. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नांदिमुख्यः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।

३. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नांदिमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।

४. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नांदिमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।

- **आसनदानम्** विश्वेदेवा तथा सभी पित्रों के लिए आसन दें।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवावः ॥

२. **ॐ मातृ-पितामहि- प्रपितामहिनां नांदिमुखिनां ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवावः ॥

३. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहानां नान्दीमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवावः ॥

४. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवावः ॥

- **गंधादि दानम्** विश्वेदेवा तथा सभी पित्रों के आसन पर जल, वस्त्र, यज्ञोपवित, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सोपारी, आदि अर्पण करें।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

२. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्य: नान्दिमुख्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

३. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: सपत्निका: नान्दिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

४. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

- **भोजन निष्क्रय दानम्** भोजन निष्क्रय निमित्त दक्षिणा दें।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त अन्नं निष्क्रय भूतं द्रव्य अमृत रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

२. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्य: नांदिमुखिभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त अन्नं निष्क्रय भूतं द्रव्य अमृत रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

३. **ॐ पितृ - पितामह - प्रपितामहा: नान्दिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त अन्नं निष्क्रय भूतं द्रव्य अमृत रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

४. **ॐ मातामह - प्रमातामह - वृद्ध प्रमातामहा: सपत्निका: नान्दिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त अन्नं निष्क्रय भूतं द्रव्य अमृत रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि: ।

- **सक्षिरयवमुदक दानम्** दुध, जव, जल मिलाकर अर्पण करें।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयन्ताम् ।
२. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपिताहिभ्य: नान्दिमुख्य: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयन्ताम् ।
३. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नान्दिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयन्ताम् ।
४. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयन्ताम् ।

- **जलाऽक्षत पुष्प प्रदानम्** जल, पुष्प, चावल सभी आसनों पर चढायें।
  - **शिवा आपः सन्तु इति जलम्।**
  - **सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्।**
  - **अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इति अक्षतन्।**

- **जलधारा दानम्** पितरों के लिए अँगुठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।
  - **ॐ अघोराः पितरः सन्तुः। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।**

- **आशिष ग्रहणम्**

यजमान हाथ जोड़कर प्राथना करें।	ब्राह्मण कहें।
▪ **गोत्रंन्नोभि वर्धंतां।**	**अभिवर्धंतांवो गोत्रम्॥**
▪ **दातारोनोभि वर्धंतां।**	**अभिवर्धंतांवो दातारः॥**
▪ **संततिर्नोभि वर्धंतां।**	**अभिवर्धंतांवःसंततिः॥**
▪ **श्रद्धाचनोमाव्यगमत।**	**माव्यगमत्श्रद्धा॥**
▪ **अन्नचनोबहुभवेत्।**	**भवतुवोबह्वन्नम्॥**
▪ **अतिथिंश्चलभेमहि।**	**लभतांवोतिथयः॥**
▪ **वेदाश्चनोभि वर्धंतां।**	**अभिवर्धंतावो वेदाः॥**
▪ **मायाचिष्मकंचन।**	**मायाचध्वं कंचन॥**
▪ **एताःआशिषःसत्याःसंन्तु।**	**सन्त्वेताः सत्याः आशिषः॥**

- **दक्षिणा दानम्** मुन्नका, आँवला, यव, अदरक, मूल, तथा दक्षिणा लेकर।

१. **ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥

२. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्य नांदिमुख्यः।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥

३. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्यः नांदिमुखेभ्यः।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥

४. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दिमुखाः।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥

- यजमान ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ इयक्षते ।
  - ॐ इडामग्ने पुरुद ७ स ७ सनिं गोः शश्वत्तम ७ हव मानाय साध ।
    स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥
  - अनेन नांदिश्राद्धं संपन्नं ।
- ब्राह्मण सुसंपन्न ।

- **प्रार्थना** अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
  ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ ॥१॥
  - अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिंदकाः ।
    ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥ ॥२॥
  - ऋत्विजश्च यथा पूर्वे शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
    यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विवसत्तमाः ॥ ॥३॥
  - अस्मिन् कर्मणि मे विप्राः वृता गुरुमुखादयः ।
    सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं कर्म यथोदितम् ॥ ॥४॥
  - अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।
    सुप्रसादैः प्रकर्तव्यं कमदं विधिपूर्वकम् ॥ ॥५॥

- **विसर्जनम्** ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽ ऋतज्ञाः ।
  अस्य मद्धवः पिबत मादयद्धवं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥१॥
  - ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे । आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात् ॥ ॥२॥

- आस्मिन् नांदिश्राद्धे न्युनातिरिक्तं नांदिमुख प्रसादात्परिपुर्णोस्तु । अस्तु परिपुर्णतां ॥
- अनेन नांदिश्राद्धाख्येन कर्मणः नंदमुख नंदपितरः प्रियंतां वृद्धिः ॥

- **आचार्य वरणम्** ब्राह्मण को दक्षिणा और नाई को न्यौछावर दें ।
  - ॐ तत्स० अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहम् शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनीयशाखा-ध्यायिनम् अमुक-शर्माणं ब्राह्मणम् अस्मिन् कर्त्तव्ये विवाहादि कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैःआचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि, इति ब्राह्मणः ।

- दोनों की बँधी गाँठ खोल दे । दोनों मण्डप से उठ कर दही-बतासा खावें ।

॥ बारात प्रस्थान ॥

- वर और सहबाला (छोटा बालक) (विनायक-विन्दायक) दोनों मण्डप में पूर्वाभिमुख बैठे।
- स्वजनों की उपस्थिति में वर तथा उसके बगल में सहबाला सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर बैठते हैं।
- मौर (सेहरा) उपवस्त्र इत्यादि मान्य के द्वारा बाँधा जाय।
- पुरोहित गणेशाम्बिका आदि का पूजन करते हैं। उसके उपरान्त बारात प्रस्थान करती है।

॥ द्वार पूजन ॥

- वर के आने पर कन्या का पिता पहले वर के माथे में दही-चावल का टीका लगाकर आरती करें।
- कन्या पिता हाथ पकड़कर वर को आसन पर बिठावें।
- वर पूर्व की ओर कन्या का पिता पश्चिम की ओर मुँह करके बैठे।
- पृ०सं० ४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार दोनों पवित्र, आचमन एवं स्वस्तिवाचन करे।

- **संकल्प** (कन्या पिता) **ॐ अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं मम** (कन्या का नाम लेकर) **कन्यायाः विवाहांगभूत द्वार-पूजनाख्ये कर्मणि शुभता सिद्धयर्थम् गणेशादीनां पूजनम् वर पूजनञ्चाहं करिष्ये।**

- **संकल्प** (वर) **अद्य शुभ पुण्य तिथी स्वकीय विवाहांगभूत द्वार-पूजनाख्ये कर्मणि शुभता सिद्धयर्थम् गणेशादीनाम् पूजनम् अहम् करिष्ये।**

- पृ०सं० ८ में लिखी विधि से गौर-गणेश, कलश, षोडशमातृका, नवग्रह की पूजा करे।

- वर और कन्या पिता दोनों ब्राह्मणों के माथ में तिलक करें और वरण संकल्प करें।

- **संकल्प** (वरण) **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मिन् द्वारपूजनाख्ये कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् अमुक-गोत्रं, अमुक-नामकम् ब्राह्मणम् त्वामहं वृणे।**
    - ब्राह्मण वरण लेकर कहे **वृतोऽस्मि।**

॥ वर पूजन ॥

- **पाद-प्रक्षालन** कन्या के पिता अथवा भाई वर का पाद-प्रक्षालन (पाँव धौवे) करे।
  - **ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोह-मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।**

- **तिलक** पाँव पर अक्षत छोड़ कर माथ में तिलक करें।
  - **ॐ कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभम्,**
    नासाग्रे वर मौक्तिकम् करतले वेणुः करे कंकणम्।
    सर्वाङ्गे हरिचन्दनम् सुललितम् कण्ठे च मुक्तावली,
    गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः॥

- **अक्षत** वर को अक्षत लगाये।
  - **ॐ अक्षन्न-मीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।**
    अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥

- **माल्यार्पण** वर को माला पहनाये।
  - **ॐ याऽऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय।**
    ताऽअहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च॥
  - **ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु।**
    तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि॥

- कन्या का पिता या भ्राता वर के वरण हेतु कपडे, अँगूठी, आभूषण, द्रव्य-नारियल और जल-अक्षत हाथ में लेकर संकल्प करे।

- **संकल्प** **ॐ अद्य पूर्वोच्चारित ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहं, मम अमुकी नाम्नी कन्यायाः विवाहांगभूत द्वार पूजने इदं द्रव्यादिकम् अस्मै सुपूजिताय अमुक-गोत्राय, अमुक-नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
  - यह कह कर द्रव्य आदि वर के हाथ में दे दे, वर उसे लेकर माथ लगावे।

- **दुर्गा - जनेऊ (द्वितीय यज्ञोपवीत)**

- कन्या का भाई अपने पिता के आगे बैठकर ऊपर जल छिड़के, आचमन करे।
- अक्षत-पुष्प लेकर गौर-कलश का ध्यान कर उन पर छोड़ दे।
- हाथ में कुश-द्रव्य और जनेऊ लेकर संकल्प पढ़े।

- **संकल्प** **अद्य अमुक-गोत्र:, अमुक-नामकोऽहं स्वभगिन्या: विवाहांगभूत द्वार-पूजनाख्ये कर्मणि इमे यज्ञोपवीते द्रव्यादि सहिते अस्मै अमुक-गोत्राय, अमुक-नामकाय वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

- संकल्प करके जनेऊ और रुपया वर के हाथ में दे दे।
- वर उसे लेकर माथ लगाये और जनेऊ ब्राह्मण को दे दे।
- ब्राह्मण आदि ५ व्यक्ति मिलकर वर को वह जनेऊ पहना दे।
  - मन्त्र **ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात।**
    आयुष्य मग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल मस्तु तेजः॥
    - वर २ बार आचमन करे।

- कन्या भ्राता व वर एक दूसरे को पान खिलावें और गले मिलें।
- बैठकर ब्राह्मण को दक्षिणा नाई को न्यौछावर दें।

- **दक्षिणा संकल्प** कन्या दाता और वर भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे।
  - **ॐ अद्य कृतैतद् वर-पूजन कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त-दोष परिहारार्थं नाना-नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।**

- **भगवत् प्रार्थना** **प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।**
  स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
  यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
  न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
  ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

॥ सौभाग्य कर्म / चढ़ाव / कन्या वरण (लोकाचार) ॥

- कन्या के हाथ में चावल-गुड़-सिन्दूर की डिबिया रखकर मण्डप ले आवे।
  - मंत्र **ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।**
    शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
- कन्या को पश्चिमाभि मुख बैठाकर पृ०सं० ४ में दिये हुए मंत्रों से पवित्र, आचमन एवं स्वस्तिवाचन करे।

- **संकल्प** (कन्या) **ॐ अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रा, अमुकी-नाम्नी स्व विवाहांगभूत रक्षा सूत्र सौभाग्य वस्तु ग्रहण कर्मणि शुभ सौभाग्य सिद्धयर्थम् पूर्वावाहित गौरी-गणपति वरुणादि देवानां पूजन अहम् करिष्ये।**

- **ध्यान** (गणेश) **विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,**
  लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
  नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,
  गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

गणेशाय नमः	गणेशम्	आ०, स्था०, पू०,	सर्वार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
वरुणाय नमः	वरुणम्	आ०, स्था०, पू०,	सर्वार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐकाराय नमः	ॐकारम्	आ०, स्था०, पू०,	सर्वार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
लक्ष्म्यै नमः	लक्ष्मीम्	आ०, स्था०, पू०,	सर्वार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
कुबेराय नमः	कुबेरम्	आ०, स्था०, पू०,	सर्वार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

- पृ०सं० १४ में दिये हुए मंत्रो के अनुसार पंचोपचार पूजन कर दें।

- **चढ़ाव सामग्री पूजन**

- वर पक्ष से आये चढ़ाव के सामान पर अक्षत-पुष्प कन्या छोड़े।
- **ताग-पाट परिधान** वर का ज्येष्ठ भ्राता कन्या को तागपाट (पट्टसूत्र) गणेश और कलश को स्पर्श कराकर कन्या के पहले बायें फिर दाहिने हाथ में बाँधे।
  - देशाचार के अनुसार कन्या के हाथ में वस्त्र, आभूषण आदि प्रदान किया जाता है।

- **मौरी परिधान** कन्या के माथे पर मौरी लगावे।
  - **ॐ शुभिके शिर आरोह शोभयन्ती मुखं मम।**

- **अंजुलि भरे** वर पक्ष से गुड़-चावल-हल्दी-सुपारी-फल-भाँटा-द्रव्य आदि सामग्री लेकर कन्या की पाँच बार अंजुलि भरे।
  - **ॐ वागर्था विव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।**
    जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥
  - अंजुलि भरने के बाद यह सामग्री दोनों ओर के ब्राह्मण, नाई और कहाँर में बाँट दे।

- **गोदी भरे** जेठ (वर का बड़ा भाई) अपने दुपट्टे में पंचमेवा, गरी का गोला तथा द्रव्य लेकर मण्डप में कन्या की ओर मुँह करके कन्या के आँचल (गोदी) भरे।
  - ब्राह्मण पहले जेठ के माथ में तिलक करे।
  - मन्त्र **ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।**
    शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणाम् उदयस्तव॥

- **आशीर्वाद** जेठ दोनों हाथ में चावल लेकर कन्या के ऊपर छोड़ता हुआ आशीर्वाद दे।
  - **ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।**
    अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥
  - **ॐ सौभाग्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु, ॐ कल्याणमस्तु।**

- **संकल्प** (दक्षिणा) ब्राह्मण को दक्षिणा नाई को न्यौछावर दे।
  - **ॐ अद्य अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्माहं, अमुक-गोत्रस्य, अमुक-शर्मणः ममानुजस्य विवाहांगभूते कन्या-पूजने न्यूनातिरिक्त-दोष परिहारार्थं नाना-नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये।**

- **प्रार्थना** (कन्या) **ॐ अन्यथा शरणयं नास्ति त्वमेव शरणं मम।**
  तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर॥

- इसके बाद कन्या के हाथ में सिंधोरा (काठ की सिन्दूर की डिबी जो चढ़ाव में वर पक्ष से आती है) देकर जल की धार देता हुआ कन्या को कोहबर में जाकर उसे दही बताशा खिला देना चाहिए।

॥ विवाह प्रारम्भ ॥

- कन्या पिता पाँव पूजने वाली नयी परात में दही-अक्षत रख कर।
- आटा के बने ४ बत्ती के चौमुखे दीपक को (मानिक दिया) जला कर परात में रख ले।
- कन्या पिता परात को लेकर पश्चिम मुख खड़ा हो, वर को मण्डप में बुलावे।
- वर के आते समय ब्राह्मण शान्ति पाठ करें--

- **शान्ति पाठ** — **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥**

- **तिलक** (वर) — कन्या पिता वर के माथे में दही अक्षत का टीका लगावे।
  - मंत्र — **ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवा मरुद् गणा। तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥**

- **आरती** (वर) — मानिक दिया से ५ बार वर की आरती करे।
  - मंत्र — **ॐ मंगलं भगवान विष्णुर्मंगलं गरुड ध्वज। मंगलं पुण्डरी काक्षो मंगलाय तनो हरिः ॥**

- आरती करने के बाद। मानिक दिया वर के हाथ मे दे दे। वर मानिक दिया लिये खडा रहे।

- **उपानह त्याग** (जूता) — कन्या पिता अपने दाहिने हाथ से वर के पांव पर २ २ दाना अक्षत छोड़ता रहे।
  - मंत्र — **ॐ अथ वाराह्याऽ उपानहाऽ उपमुंचते। अग्नौ ह वै देवा घृत कुम्म प्रवेश यांचक्रुस्ततो वराहः सम्बभूव तस्माद्वराहो मेदुरो घृताद्धि सम्भूतस्तस्माद्वराहे गावः संजानते स्वमेवैतद्रसमभिसंजानते। तत्पशूनामेवैतद्रजसे प्रतिष्ठिति। तस्माद् वारह्या उपानहाऽ उपमुंचते॥** श.ब्रा. ५/३/५/१९
    - नाई वर का जूता उतार दे। ब्राह्मण हो तो पहले दाहिने पैर का दूसरी जाति हो तो बाएँ पैर का जूता उतारे।

    - कन्या पिता वर के हाथ में रखे दीपक पर अक्षत छोड़े।
  - मंत्र — **ॐ अथैन् ७ शालां प्रपादयति सा प्रपादयन् वाचयति याते धामानि हविषा यजन्ति ताते विश्वा परिभूरस्तु। यज्ञं गयस्फानः प्रतरणः सू वीरो वीरहा प्रचारा सोम दुर्यानिति गृहा वैदुर्या गृहान्नः शिवः शान्तोऽपाप कृत प्रचरेत्त्ये वै तदाह ॥**
    - नाई वर के हाथ से दीपक लेकर ईशान में रख दे।

- **आसन** दे (वर) कन्या पिता नए पीढ़ा पर ५ जगह चावल रख कर उठावे।
  - वर तथा दोनों ब्राह्मण भी पीढ़ा को पकड़ लें और ३ बार गणेश जी को छुआ दें।
  - मन्त्र **ॐ षडर्घ्या भवन्त्या चार्य ऋत्विग् वैवाय्यो राजा प्रियः स्नातकः ॥**
  - पीढ़ा का चावल गणेश जी के आगे गिरा दे।
  - पीढ़ा को वर के बैठने की जगह रख दे।
  - कन्या पिता वर का हाथ पकड़कर आदर से आसन (पीढे) पर बैठाये।
  - मन्त्र **ॐ साधु भवानास्ताम्। अर्चयिष्यामो भवन्तम्।**
  - वर कहे **ॐ अर्चय।**

- कन्या पिता स्वयं भी बैठकर आचमन, प्राणायाम कर हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प करे।

- **संकल्प** **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुक-संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्माऽहं, अमुक-गोत्रायाः, अमुक-नाम्याः, अमुक-कन्यायाः, भर्ता सह धर्मप्रजोत्पादन गृह्य-परिग्रह धर्माचरणेष्वधिकार सिद्धि-द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं ब्राह्म-विवाह-विधिना विवाहाख्यं संस्कारं करिष्ये। तत्र कन्यादानप्रतिग्रहार्थं गृहागतं स्नातकवरं मधुपर्केणार्चयिष्ये।**

- **विष्टर प्रदान** कन्या पिता हाथ में कुशा या आम्रपल्लव लेकर विष्टर दे।
  - ब्राह्मण कहे **ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः।**
  - कन्यापिता कहे **ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।**
  - वर कहे **ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि।**
  - कन्या पिता वर के हाथ में कुशा या आम्रपल्लव दे दे।
  - वर उसे लेकर अपने दाहिने पाँव के नीचे रख ले। ब्राह्मण बाएँ पैर के नीचे रखे)
  - मंत्र **ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानाना मुद्यतामिव सूर्यः।**
    इमन् तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभि दासति॥

- **पाद्य प्रदान** कन्या पिता १ पात्र में जल, लावा, कुंकुम, चावल, पुष्प डालकर हाथ में ले।
  - ब्राह्मण कहे **ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ।**
  - कन्यापिता कहे **ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ।**
  - वर कहे **ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि ।**
  - कन्या पिता पियाला वर को दे दे।
  - वर उसे लेकर दाहिने हाथ से २ बूँद जल अपने पाँव पर छिड़क ले।
  - मंत्र **ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोह मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ।**

- **तिलक करण** कन्या पिता हल्दी-अक्षत से वर के माथ में तिलक लगावे।
  - मंत्र **ॐ कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कोस्तुभम् ।**
    नासाग्रे वर मौक्तिकं कर तले वेणुः करे कंकणम् ॥
    सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
    गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥

- **पुष्पमाला धारण** वर के गले में पुष्पमाला पहना दे।
  - मंत्र **ॐ याऽ आहरज् जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामा येन्द्रियाय ।**
    ताऽअहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ॥

- **पुनः विष्टर दान** कन्या पिता कुशा या आम्रपल्लव लेकर चुपचाप वर को दे दे।
  - वर उसे लेकर अपने दूसरे पाँव के नीचे रख ले।

- **अर्घ्य प्रदान** कन्या पिता १ पात्र में जल-दूब-अक्षत-फूल-चन्दन-हल्दी आदि अपने हाथ में ले।
  - ब्राह्मण कहे **ॐ अर्घोऽ अर्घोऽ अर्घः ।**
  - कन्यापिता कहे **ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम् ।**
  - वर कहे **ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि ।**
  - वर कन्या पिता से जल का पियाला लेकर माथे लगावे।
  - मंत्र **ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामान वाप्नवानि ।**
  - पियाले का २ बूंद जल ईशानकोण में गिरा दे। पियाला कलश के पास रख दे।
  - मंत्र **ॐ समुद्रं व प्रहिणोमि स्वां योनि मभि गच्छत ।**
    अरिष्टा ऽस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः ॥

- **आचमन प्रदान** — कन्या पिता १ दूसरे पियाला में जल ले।
  - ब्राह्मण कहे — **ॐ आचमनीयम् - आचमनीयम् - आचमनीयम्।**
  - कन्यापिता कहे — **ॐ आचमनीयम् प्रतिगृह्यताम्।**
  - वर कहे — **ॐ आचमनीयम् प्रतिगृह्णामि।**
    - वर कन्या पिता से जल का प्याला लेकर २ वार आचमन कर ले।
  - मंत्र — **ॐ आमागन्यशसा स ૭ सृज वर्चसा।**
    तं मा कुरु प्रियं प्रजाना मधिपतिं पशूना मरिष्टिं तनूनाम्॥
    - पियाला नाई लेकर मण्डप के बाहर फेंक दे।

- **मधुपर्क प्रदान** — कन्या पिता १ काँसे, दोनिया या पियाला के पात्र में दही-शहद-घी मिलाकर अपने बाएँ हाथ में रखे दाहिने हाथ से उसे ढाँक ले।
  - ब्राह्मण कहे — **ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः।**
  - कन्यापिता कहे — **ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।**
  - वर कहे — **ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि।**
    - वर कन्या पिता के हाथ में रखे हुए पात्र के ढक्कन को हटाकर देखे।
  - वर उसे देखे — **ॐ मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षं।**
    - कन्या पिता मधुपर्क वर के हाथ में दे दे।
  - मंत्र — **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ श्विनोर् बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।**
    - वर दाहिने हाथ की अनामिका (तीसरी) अँगूली तथा अँगूठा से मधुपर्क ३ बार मिलाकर सामने भूमि पर थोड़ा सा छिड़क दे।
  - मंत्र — **ॐ नमः श्यावास्या याऽन्न शने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।**
    - वर - ३ बार मधुपर्क अपने मुख में लगा ले (प्राशन करे)।
  - मंत्र — **ॐ यन् मधुनो मधव्यं परम ૭ रूप मन्नाद्याम्।**
    तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रुपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥
    - बचा हुआ मधुपर्क नाई लेकर बाहर फेंक दे। वर दो बार आचमन करे।

- **अंग स्पर्श** (वर) वर दाहिने हाथ से अपने अंगों का स्पर्श करे।
  - मुख **ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु।**
  - नाक **ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।**
  - आँख **ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।**
  - कान **ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।**
  - हाथ **ॐ वाह्वोर्मे बलमस्तु।**
  - जंघा **ॐ ऊर्वोमे ओजोऽस्तु।**
  - पूरा शरीर **ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस् तन्वा मे सह सन्तु।**

- **गौ स्तुति** कन्या पिता वर के साथ १ कुशा या दुर्वा १ पियाला या पिहानी में पकडे।
  - कन्यापिता कहे **ॐ गौर् गौर् गौः।**
  - वर कहे **ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां ७ स्वसा दित्याना ममृतस्य नाभिः।**
    प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मा गाम नागा मदितिं विधिष्ट।
    मम चामुक शर्मणो यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः।
  - **ॐ उत् सृजत तृणान्यत्तु।** यह ऊँचे स्वर से कहकर **वर** कन्या पिता से तृण लेले। वर तृण को तोड़ कर ईशान कोण में फेंक दे।

- **गोदान** कुछ लोग यहां पर गोदान भी करते हैं।
  - **संकल्प** **ॐ अद्य मधुपर्कोपयोगिनो गोरुत्सर्ग कर्मणः साद्गुण्यार्थे गोनिष्क्रयीभूतमिदं द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमुत्सृज्ये।**
  - ब्राह्मण कहे **ॐ स्वस्ति।**

॥ अग्नि स्थापन ॥

- वेदी निर्माण एक हाथ की चतुरस्त्र (चौकोर) वेदी बनावें ।

- **पञ्च-भूसंस्कार**
  - **संकल्प** — **अद्य अमुक-गोत्रोत्पन्नः, अमुक-शर्माऽहं, धर्मार्थकाम सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीतये ब्रह्म-विवाह विधिना अस्मिन् विवाह कर्मणि पंचभूसंस्कार पूर्वकं योजक नामाग्नि स्थापनं करिष्ये ।**
  - परिसमुह्य — **ॐ दर्भैः परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य ।**
    तीन कुशों (दर्भ) से वेदी अथवा ताम्रकुण्ड का दक्षिण से उत्तर की ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशों को ईशान दिशा में फेंक दे ।
  - उपलेपनम् — **ॐ गोमयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य ।**
    गोबर और जल से लीप दे ।
  - उल्लेखनम् — **ॐ दर्भ या स्त्रुवमूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य ।**
    स्त्रुवा या कुशमूल से पश्चिम से पूर्व की ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिण से प्रारम्भ कर उत्तर की ओर खींचे ।
  - उद्धरणम् — **ॐ अनामिकाङ्गुष्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य ।**
    रेखांकित किये गये स्थल के ऊपर की मिट्टी अनामिका और अँगुठे के सहकार से पूर्व या ईशान दिशा की ओर फेंक दे ।
  - अभ्युक्षण — **ॐ उदकने अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य ।**
    पुनः जल से कुण्ड या स्थण्डिल को सींच दे ।

- **अग्नि स्थापनम्** — सौभाग्यवती स्त्री के द्वारा कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में लायी गयी प्रदीप्त अग्नि को स्वाभिमुख करते हुए **योजन** नामक अग्नि को वेदी में स्थापित करें ।
  - **मन्त्र** (अग्नि) — **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ।**
    देवाँ २ आ सादयादिह ॥
    - थाली में द्रव्य - अक्षत छोड कर अग्नि जिससे लिये हैं उन्हें देदें ।

- **वस्त्र चतुष्टय प्रदान**
  - **संकल्प** कन्या पिता वर के लिए १ पीली धोती तथा दुपट्टा लेकर संकल्प करे।
    - **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक:गोत्र:, अमुक-नामाऽहं इदं वस्त्रद्वयं स्वकन्याया: विवाहार्थम् अमुक-गोत्राय, अमुक-नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

- वर वस्त्र धारण वर धोती दुपट्टा लेकर पहन ले।
  - मंत्र (वस्त्र) **ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदिष्ट रश्मि।**
    शतं च जीवामि शरद: पुरुची रायस् पोषमभि सं व्ययिष्ये॥
  - मंत्र (उपवस्त्र) **ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती।**
    यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥

- कन्या वस्त्र धारण कन्या पिता कन्या की साडी और चुनरी गणेश जी को छुवाकर वर को भी स्पर्श करा दे और कन्या को पहनने के लिए कोहबर में भीतर भिजवा दे।
  - मंत्र (वस्त्र) **ॐ जरां गच्छ परि-धित्स्व वासो भवाऽ कृष्टीना मभि शस्ति पावा। शतं च जीव शरद: सुवर्चा रयिं च पुत्रा ननु सं व्यवस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वास:॥**
  - मन्त्र (उपवस्त्र) **ॐ या अकृन्तन्नवयं या अतन्वत। याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ।**
    तास्त्वा देवीर्जरसे सं व्ययस्वाऽऽयुष्मत परिधत्स्व वास:॥

- **कन्या का आगमन** महिलाएँ कौतुकागार (कोहबर) से हाथ में मंगलद्रव्य ली हुई कन्या को मण्डप में लायें।
    - कन्या के आते समय ब्राह्मण शान्ति पाठ करे।
  - शान्ति पाठ **द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्व ७ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामा शान्तिरेधि॥**

- कन्या मण्डप में आकर पिता के आगे पश्चिम मुख या पूर्वाभिमुख आसन पर बैठ जाय।
- कन्या की माता भी मण्डप में आकर पिता के दाहिने बैठ जाय।
- कन्या के माता व पिता की गाँठ बाँध दी जाय।
- कन्या के हाथ का चावल-गुड़ नाई ले ले।

- **सम्मुखी करण** वर तथा कन्या दोनों एक-दूसरे की ओर देखें।
    - लोकाचार में वर-कन्या दोनों पान बदलते हैं।
  - मंत्र **ॐ समंजन्तु विश्वेदेवा: समापो हृदयानि नौ।**
    सं मात-रिश्वा सं धाता समु-देष्ट्री दधातु नौ॥
- **ग्रन्थिबन्धन** आचारानुसार कन्यादाता अपनी पत्नी के वस्त्र के साथ ग्रन्थिबन्धन कराये।

॥ शाखोच्चार ॥

गोत्रोच्चार का क्रम यह है कि वर कन्या के हाथ चावल, गुड, द्रव्य देकर पहले वरपक्ष के ब्राह्मण वेदमन्त्र, मंगलश्लोक फिर शाखोच्चार करें। इसी क्रम से कन्यापक्ष के ब्राह्मण भी शाखोच्चार करें। वंश, गोत्र, प्रवर तथा सापिण्डय के निर्णय के लिये वर एवं कन्या का क्रम से तीन-तीन बार गोत्रों का उच्चारण ब्राह्मण द्वारा किया जाता है।

- **प्रथम शाखोच्चार**
  - **वर पक्ष - १**
  - वेद मन्त्र

    ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥
  - मंगल श्लोक

    गौरी-नन्दन-गौर-वर्ण-वदनः श्रृंगार लम्बोदरः,
सिन्दूरार्चितदिग्गजेन्द्र वदनः पादौ रणन्नूपुरौ।
कर्णौ लम्ब-विलम्बि-गण्ड-विलसत्-कण्डे च मुक्तावली
श्रीविघ्नेश्वरविघ्नभंजनकरो देयात्सदा मङ्गलम् ॥
  - गोत्रोच्चार

    स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रोऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति वर-पक्षे प्रथम शाखोच्यारः ॥

  - **कन्या पक्ष - १**
  - वेद मन्त्र

    ॐ पुनस्त्वाऽअदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो बसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
  - मंगल श्लोक

    ईशानो गिरिशो मृडः पशुपतिः शूली शिवः शङ्करो,
भूतेशः प्रमथाधिपः स्मरहरो मृत्युञ्जयो धूर्जटिः।
श्रीकण्ठो वृषभध्वजो हरभवो गंगाधरस्त्र्यम्बकः,
श्रीरुद्रः सुरवृन्दवन्दितपदः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥
  - गोत्रोच्चार

    स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रीऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति कन्या- पक्षे प्रथम शाखोच्यारः ॥

द्वितीय शाखोच्चार

- **वर पक्ष - २**
- वेद मन्त्र — ॐ पुनस्त्वाऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
  घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
- मंगल श्लोक — कौपीनं परिधाय पन्नगपतेः गौरीपतिः श्रीपते-,
  रभ्यर्णं समुपागते कमलया सार्धं स्थितस्यासने।
  आयाते गरुडेऽथ पन्नगपतौ त्रासाद्बहिर्निर्गते,
  शम्भुं वीक्ष्य दिगम्बरं जलभुवः स्मेरं शिवं पातु वः ॥
- गोत्रोच्चार — स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रोऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति वर-पक्षे द्वितीय शाखोच्चारः ॥

- **कन्या पक्ष - २**
- वेद मन्त्र — ॐ आयुष्यं वर्चस्य ७ रायस्पोषमौद्भिदम्।
  इद ७ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशताद् माम् ॥
- मंगल श्लोक — कौसल्या-विशदालवालजनितः सीतालतालिङ्गितः
  सिक्तः पंक्तिरथेन सोदरमहाशाखादिभिर्वर्धितः।
  रक्षस्तीव्रनिदाघपाटनपटुश्छायाश्रितानन्दकृद्
  युष्माकं स विभूतयेऽस्तु भगवान् श्रीरामकल्पद्रुमः ॥
- गोत्रोच्चार — स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रीऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति कन्या-पक्षे द्वितीय शाखोच्चारः ॥

- **तृतीय शाखोच्चार**

  - **वर पक्ष - ३**
  - वेद मन्त्र

    ॐ यज्जाग्रतो दूर-मुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
    दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

  - मंगल श्लोक

    ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः ।
    शक्रो देवपतिर् यमः पितृ पतिश् चन्द्रस् च तारापतिः ॥
    विष्णुर यज्ञपतिर् हविर् हुतपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः ।
    सर्वे ते पतयः सुमेरु सहिताः कुर्वन्तु वै मंगलम् ।

  - गोत्रोच्चार

    स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रोऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रोऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये । वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति वर-पक्षे तृतीय शाखोच्यारः ॥

  - **कन्या पक्ष - ३**
  - वेद मन्त्र

    ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
    स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥

  - मंगल श्लोक

    दुर्गे दुर्गा विनाशिनी भयहरी माताभया हारिणी ।
    कामाक्षा गिरिजा उमा भगवती वागीश्वरी योगिनी ॥
    वन्दी सुन्दर भैरवी सुललिता सिद्धेश्वरी रेणुका ।
    वाराही वरदायिनी गिरिसुता कुर्वन्तु वै मंगलम् ॥

  - गोत्रोच्चार

    स्वस्ति श्रीमन् नंद नंदन चरण कमल भक्ति अनुराग धर्ममूर्त्ति धर्मावतार श्री अग्रकुल कमल प्रकाश महतां मुकुटमणि सभा श्रृंगार सद् विद्या विनोदेन कृत कीर्ति विस्तारितस्य अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीऽयम् / अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पुत्रीऽयम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये । वरः चिरंजीवी कन्या सावित्री भूयात् इति कन्या-पक्षे तृतीय शाखोच्यारः ॥

- वर व कन्या के हाथ से गुड़े-चावल ब्राह्मण ले ले ।

॥ कन्या दान विधि ॥

- कन्यादाता अपने दक्षिण भाग में पत्नी को एवं कन्या को पश्चिमाभिमुख बैठा ले और हाथ में जल-अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना पूर्वक कन्यादान का प्रतिज्ञा संकल्प करे।

- **प्रतिज्ञा संकल्प** **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैकदेशे बौद्धावतारे श्री पुण्यक्षेत्रे अमुक-संवत्सरे श्रीसूर्ये, अमुक-अयने, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे तथा च यथा-यथा राशि स्थितेषु ग्रहेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य समये श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्ति कामः अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं सपत्नीकोऽहं समस्त पितृणां निरतिशय आनन्द ब्रह्मलोकाप्त्यादिकामः कन्यादान कल्पोक्त फल प्राप्तये अनेन अमुक-वरेण अस्यां अमुक-कन्यायाम् उत्पादयिष्यमाण सन्तत्या दशपूर्वान् दशापरान् पुरुषान् आत्मानं च पवित्री कर्तुम् श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये ब्राह्म-विवाह-विधिना कन्यादान अहं करिष्ये ॥**

  - हाथ का कुश-अक्षत-जल पौंपुजीवाली परात में छोड़ दें।

- प्रार्थना **ॐ दाताऽहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्य दैवतम्।**
वरोऽसौ विष्णु रूपेण प्रतिगृह्णा त्वयं विधिः ॥

  - **ॐ कन्यां कनक सम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम्।**
दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया ॥
विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्व देवताः।
इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां ताराणाय च ॥

कन्यादान

- पौपुजी की परात लड़की के सामने ऐसे ढंग से रखे कि कन्यादान का जल उसी परात में गिरे।
- आटा की लोई बना कर उस पर खड़ी हल्दी, सुपारी, रुपया या सोना आदि तथा कुशा लड़की के दोनों हाथ पर रख दें।
- कन्या के हाथ के नीचे वर का दाहिना हाथ दें।
- कन्या-वर-दोनों के हाथों के नीचे कन्या के पिता-माता अपना-अपना दाहिना हाथ लगावें।
- कन्या का भाई पौंपुजी वाले लोटा से जल की धार लोई पर छोड़े, धार टूटनी नहीं चाहिए।

- **प्रधान संकल्प** **अद्य पूर्वोक्त कल्पित विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् सपत्नीकोऽहं शतगुणी कृत ज्योतिष्टो मातिरात्र शतफल प्राप्तिकामश् चास्मत् कुलोत्पन्नाम् ॥**

  १. **अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पुत्रीम् ।**

  २. **अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक नाम्नः पुत्रीम् ।**

  ३. **अमुक-गोत्रस्य-, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्रीम् । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पुत्रीम् ।**

  अमुकी नाम्नीम् इमां कन्यां यथाशक्ति अलंकृतां सुपूजिताम्

  १. **अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्राय । अमुक-गोत्रस्य अमुक-नाम्नः पौत्राय । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पुत्राय ।**

  २. **अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रायः । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्राय । अमुक-गोत्रस्य, अमुक- नाम्नः पुत्राय ।**

  ३. **अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः प्रपौत्रायः । अमुक-गोत्रस्य, अमुक-नाम्नः पौत्राय । अमुक-गोत्रस्य, अमुक- नाम्नः पुत्राय । अमुक गोत्राय अमुक नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ।**

  - संकल्प कर के कन्या का हाथ वर के हाथ में दे दें। (कन्या के हाथ रखी लाई वर के हाथ में कन्या से दिला दे।) माता पिता अपना हाथ हटा लें।
  - ब्राह्मण कन्या भाई को तिलक लगा दे।

- कन्यादान लेकर वर कहे **ॐ स्वस्ति । द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातुअसौ देवी ।**
- कन्या को पिता के आगे से उठा कर वर की दाहिनी ओर बिठा दे।
- निचे लिख वाक्यों को कन्या दाता एवं वर तीन-तीन बार कहें।

१. **प्रथम**

कन्यापिता कहे **ॐ यस् त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह । धर्मे चार्थे च कामे च त्वयेयं नाति चरितव्या ॥**

- वर कहे **ॐ नाति चरामि ।**
- ब्राह्मण पढ़ें **ॐ कोऽदात् कस्माऽ अदात् कामोऽदात् । कामायादात् । कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते ॥**

२. **द्वितीय** कन्यापिता कहे **ॐ यस् त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह।**
धर्मे चार्थे च कामे च त्वयेयं नाति चरितव्या॥

- वर कहे **ॐ नाति चरामि।**
- ब्राह्मण पढ़ें **ॐ कोऽदात् कस्माऽ अदात् कामोऽदात्। कामायादात्।**
कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते॥

३. **तृतीय** कन्यापिता कहे **ॐ यस् त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह।**
धर्मे चार्थे च कामे च त्वयेयं नाति चरितव्या॥

- वर कहे **ॐ नाति चरामि।**
- ब्राह्मण पढ़ें **ॐ कोऽदात् कस्माऽ अदात् कामोऽदात्। कामायादात्।**
कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते॥

- **प्रार्थना** (कन्या पिता) **ॐ गौरी कन्या मिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम्।**
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्ता विप्र समाश्रय॥
कन्ये ममाग्रतो भूयाः, कन्ये मे देवि पार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठतो भूयाः त्वद् दानान्मोक्षमाप्नुयाम्।
मम वंश कुले जाता यावद् वर्षाणि पालिता।
तुभ्यं वर मया दत्ता पुत्र पौत्र प्रवर्धिनी॥

- **पौंपुजी** कन्या पिता और माता दोनों क्रम से ३ बार वर का, २ बार कन्या का परात के जल से पाँव पूजें। जल अपने माथ लगावें।
  - ब्राह्मण पढ़े **ॐ वराय नमः। वरचरणाभ्यां नमः।**
  ॐ इदं जलं कन्या कुमारी चरणेभ्यो नमः। हाथ धो ले।
  - **तिलक** (वर) **ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।**
  तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये॥
    - लड़की का हाथ पीला करे (हथेली में हल्दी लगावें)।

- कन्या पिता-माता रुपया-सोना बरतन आदि जो देना हो, उसका संकल्प करें।
  - संकल्प (सांगता) **ॐ अद्य कृतैतत्कन्यादान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् इदं सुवर्ण दक्षिणा द्रव्यं गो मिथुनं च अमुक-गोत्राय, अमुक-नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
    - वर के हाथ में द्रव्य आदि दे। वर द्रव्य लेकर कहे। **ॐ स्वस्ति।**
    - इसी तरह परिवार वाले भी पौंपूजी करे।

- **गोदान** — वर यथा शक्ति गोदान करे (कन्या दान ग्रहण दोष दूर करने हेतु)।
    - संकल्प — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् मम कन्यादान ग्रहण जनित दोष निरसन पूर्वक श्री परमेश्वर प्रीति द्वारा दीर्घायु-बल-पुष्टतादि शुभ फल प्राप्तये गोनिष्क्रयी भूतम् इदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
    - ब्राह्मण गोदान लेकर कहे। **ॐ स्वस्ति।**

- **दक्षिणा (भूयसी)** — कन्या दाता भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे।
    - संकल्प — **अद्य कृतस्य कन्यादान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यून् अतरिक्त दोष परिहारार्थं यथोत्साहां भूयसी दक्षिणां विभज्य नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये।**

- **पाणि ग्रहण** — वर-कन्या का दाहिना हाथ पकड़कर निम्न मन्त्र को पढ़े।
    - मन्त्र — **ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा।**
      हिरण्य पर्णो वैकर्णः स त्वां मन्मनसां करोतु। श्री अमुकी देविति।

- **दृढ पुरुष स्थापन** — एक मनुष्य कलश में जल लेकर वेदी के दक्षिण हवन होने तक चुपचाप खड़ा हो जाय।
    - अथवा १ करई में जल भरकर वेदी के दक्षिण संभाल कर रख दे। गिरने न पावे।
    - इसी से बाद में अभिषेक होता है।

- **परस्पर समीक्षण** — वर - कन्या की ओर देखता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े--
  ॐ अघोर चक्षुर पतिघ्न्येधि शिवाः पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।
  वीर सूर्देव कामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ॥१॥
  ॐ सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
  तृतीयोऽग्निष्टे पतिस् तुरीयस् ते मनुष्यजाः॥ ॥२॥
  ॐ सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये।
  रयिं च पुत्राँश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्॥ ॥३॥
  ॐ सा नः पूषा शिवतमा मैरय सा न उरु उशती विहर।
  यस्या मुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्ट्यै ॥४॥
    - कन्या भी वर की ओर देख ले।

- अग्नि परिक्रमा — वर कन्या दोनों अग्नि की १ परिक्रमा करके अपने-अपने आसन पर बैठ जायँ।

॥ विवाह होम ॥

- **आचार्य वरण** हाथ में वरण सामग्री और जल-अक्षत लेकर हवन हेतु आचार्य का वरण करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि आचार्य कर्म कर्तुम् एभिः वरण द्रव्यैः अमुक-गोत्रम्, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणम् आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**
    - आचार्य के हाथ में वरण सामग्री दे। आचार्य कहे - **स्वस्ति, वृतोऽस्मि।**
  - प्रार्थना **आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।**
    तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

- **ब्रह्मा वरण** हाथ में वरण सामग्री और जल-अक्षत लेकर ब्रह्मा का वरण करे।
  - संकल्प **अद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि कृताऽकृता ऽवेक्षणरूप ब्रह्म-कर्म कर्त्तुम् एभिः वरण द्रव्यैः अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**
    - ब्रह्मा के हाथ में वरण सामग्री दे। ब्रह्मा कहे - **ॐ वृतोऽस्मि।**
  - प्रार्थना **यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।**
    तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥
    ॐ व्रतेन दीक्षयाप्नोति दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम्।
    दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

॥ कुशकण्डिका ॥

- **ब्रह्मा स्थापन** अग्नि देव के दक्षिण में ब्रह्मा जी का स्थापन करे।
- **प्रणीता पात्र स्थापन** अग्नि के उत्तर में कुशों के उपर प्रणीता पात्र में जल भर कर रखें।
- **परिस्तरणम्** १३ कुश या दूर्वा ले। उनके ३-३ के चार भाग को अग्नि के चारों ओर बिछायें।
  - पूर्व भाग ४ कुशा अग्निकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र बिछाये।
  - दक्षिण भाग ४ कुशा ब्रह्मासन से अग्निकोण तक पूर्वाग्र बिछायें।
  - पश्चिम भाग ४ कुशा नैर्ऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछायें।
  - उत्तर भाग ४ कुशा वायव्यकोण से ईशानकोण तक पूर्वाग्र बिछायें।
  - पुनः दाहिने हाथ से वेदी के ईशानकोण से प्रारम्भ कर वामवति ईशान पर्यन्त प्रदक्षिणा करे।
- **पात्रासादनम्** **पवित्रच्छेदना दर्भाः त्रयः** (पवित्र छेदन हेतु ३ कुश)। **पवित्रे द्वे** (पवित्री हेतु कुश)। **प्रोक्षणीपात्रम्** (प्रोक्षणी)। **आज्यस्थाली** (घी का कटोरा)। **चत्स्थाली** (चरु पात्र)। **सम्मार्जनकुशाः पञ्च** (५ मार्जन कुश)। **उपयमनकुशाः पंच** (५ उपयमन कुश)। **समिधस्तिस्रः** (अंगूठे से तर्जनी मात्र ३ लकडी)। **स्त्रुवाः आज्य** (घृत)। **पूर्णपात्रम्** (२५६ मुठ्ठी चावल से भरा पात्र)। **उप कल्पनीयानि द्रव्याणि। दक्षिणा वरो वा।** पूर्णाहुति के लिये नारिकेल आदि हवन सामग्री पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र रख लें।
  - धान का लावा, सूप (शुर्प), दृढ पत्थर, दृढ पुरुष, कन्या का भाई (लावा परछने हेतु)।

- **पवित्रक निर्माण** द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वो कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकांगुष्टेन द्वयोरग्रे छेदयेत्। द्वे ग्राहये। त्रीणि अन्यच्च उत्तरत: क्षिपेत्।
- **प्रोक्षणीपात्र** प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य प्रात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यत: । **पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणीपात्रजलस्य** (प्रोक्षणी पात्र से ३ बार अपने ऊपर छींटा मारे)। **प्रोक्षणीनां सव्यहस्ते करणम्** (प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बांये हाथ पर रखें) । दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकांगुल्यो: मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्गिंगनम्। **प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्** (प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में ३ बार छींटा दें)। **प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्या: प्रोक्षणम्** (प्रोक्षणी पात्र के जल से सब जगह छींटा दें।
- **पर्यग्नि करणम्** ज्वलितोल्मुकेन उभयो: पर्यग्निकरणम् (अग्नि को जला दें)। इतरथावृत्ति: । अर्द्धाश्रिते चरौ स्रुवस्य प्रतपनम्। आज्यपात्र से घी को कटोरे में निकालकर उस पात्र को वेदी के दक्षिणभाग में अग्निपर रख दे। घी के गरम हो जाने पर एक जलती हुई लकड़ी को लेकर घृतपात्र के ईशानभाग से प्रारम्भकर ईशानभाग तक दाहिनी ओर घुमाकर अग्नि में डाल दे। फिर खाली बायें हाथ को बायीं ओ रसे घुमाकर ईशानभाग तक ले आये। यह क्रिया पर्यग्निकरण कहलाती है।
- **सम्मार्जन** (स्रुवा का) सम्मार्गकुशै: सम्मार्जनम्। अग्रै: अग्रम्। मूलै: मूलम्। प्रणीतोदकेना अभ्युक्षणम्। पून: प्रतपनम्। देशे नीधानम्। स्त्रुवाका सम्मार्जन-दायें हाथमें स्त्रुवा को पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आग पर तपाये। पुन: स्रुवा को बायें हाथ में पूर्वाग्र ऊर्ध्वमुख रखकर दायें हाथ से सम्मार्जन कुश के अग्रभाग से स्त्रुवा के अग्रभाग का, कुश के मध्यभाग से स्त्रुवा के मध्यभाग का और कुश के मूलभाग से स्रुवा के मूलभाग का स्पर्श करे अर्थात् स्त्रुवा का सम्मार्जन करे। प्रणीता के जल से स्त्रुवा का प्रोक्षण करे। उसके बाद सम्मार्जन कुशों को अग्नि में डाल दे।
- **घृत-चरु पात्र स्थापन** **आज्योद्वासनम्। चरोरुद्वासनम्।** घी एवं चरु पात्र को वेदी के पश्चिम भाग में उत्तर की ओर रख दें।
- **घृत उत्प्लवन** प्रोक्षणी में रखी हुई पवित्री के द्वारा घृत को तीन बार उपर उछाले। घृत का अवलोकन करे और घृत में कोई विजातीय वस्तु हो तो निकाल कर फेंक दें। तदनन्तर प्रोक्षणि के जल को तीन बार उछाले और पवित्री को पुन: प्रोक्षणी पात्र में रख दे।
- **३ समिधा की आहुति** **उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय।** तीन समिधा घी में डुबोकर खडे होकर मन में प्रजापति का ध्यान करते हुए अग्नि में डाल दें।
- **पर्युक्षण** (जलधर देना) प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्ने: ईशानकोणादारभ्य ईशानकोणपर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम्। हस्तस्य इतरथावृत्ति: । पवित्रयो: प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणजान्वच्य जुहोति । तत्र आज्यभागौ च ब्रम्हाणा अन्वारब्ध: स्त्रुवेण जुहुयात्। प्रोक्षणी पात्र से जल लेकर ईशान कोण से ईशान कोण तक प्रदक्षिण क्रम से जलधार गिरा दे। एवं संखमुद्रा से स्त्रुवा को पकड कर हवन करें।

॥ हवन विधान ॥

- हवन से पूर्व अग्नि का ध्यान तथा गन्धाक्षत से उसकी पूजा कर ले।
- होम करते समय स्रुवे में बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में डालते जायें।

- **प्रतिष्ठा (अग्नि)** पूर्व में वेदी में स्थापित अग्नि की निम्न मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे।
  - **ॐ योजकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।**

- **ध्यान (अग्नि)** **ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।**
  त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश॥
  - ॐ भूर्भुवः स्वः योजकनाम्ने अग्नये नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

- आघार होम
  - **ॐ प्रजापतये स्वाहा।** इदं प्रजापतये न मम। ॥१॥
  - **ॐ इन्द्राय स्वाहा।** इदं इन्द्राय न मम। ॥२॥

- आज्यभाग होम
  - **ॐ अग्नये स्वाहा।** इदं अग्नये न मम। ॥१॥
  - **ॐ सोमाय स्वाहा।** इदं सोमाय न मम। ॥२॥

- महाव्याहृति होम
  - **ॐ भूः स्वाहा।** इदं अग्नये न मम। ॥१॥
  - **ॐ भुवः स्वाहा।** इदं वायवे न मम। ॥२॥
  - **ॐ स्वः स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम। ॥३॥

- प्रायश्चित होम **ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः।**
  यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥
  इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम। ॥१॥

२. **ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
अव यक्ष्व नो वरुण ७ रराणो वीहि मृडीक ७ सुहवो न एधि स्वाहा॥
इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।

३. **ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि।**
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ स्वाहा॥
इदं अग्नये अयसे न मम।

४. **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।**
तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

५. **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धमं वि मध्यम ७ श्रथाय।**
अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥
इदं वरुण आदित्यादितये न मम।

- वर कन्या प्रणीता के जल का स्पर्श करे और अपने ऊपर छिडके।
    - मन्त्र **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं भवति वारणम्।**
    तथा देवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिणा॥

- राष्ट्रभृत होम ब्रह्मा से अन्वारब्ध (कुशा) के विना ही बारह (१२) राष्ट्रभृत हवन करे।

१. **ॐ ऋता षाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इद मृतासाहे ऋतधाम्ने अग्नये गन्धर्वाय न मम। य. १८ / ३८
२. **ॐ ऋताषाड् ऋत धामाऽग्निर् गन्धर्वस् तस्यौ षधयोऽप्सरसो मुदोनाम ताभ्यः स्वाहा।**
इद मोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो न मम।
३. **ॐ स ७ हितो विश्व सामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इदं स ७ हिताय विश्व साम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम। य. १८ / ३९
४. **ॐ स ७ हितो विश्व सामा सूर्यो गन्धर्वस्-तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा।**
इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम।
५. **ॐ सुषुम्णः सूर्य रश्मिश्-चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इदं सुषुम्णाय सूर्य रश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम। य. १८ / ४०
६. **ॐ सुषुम्णः सूर्य रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्-तस्य नक्षत्राणि अप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा।**
इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम।
७. **ॐ इषिरो विश्व व्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इदं इषिराय विश्व व्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम। य. १८ / ४१
८. **ॐ इषिरो विश्व व्यचा वातो गन्धर्वस्-तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा।**
इदं अद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्भ्यो न मम।
९. **ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम। य. १८ / ४२
१०. **ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्-तस्य दक्षिणा अप्सरसस्-तावा नाम ताभ्यः स्वाहा।**
इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस् तावाभ्यो न मम।
११. **ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।**
इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम।
१२. **ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनोगन्धर्वस्-तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा।**
इदं ऋक सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम।

- **जया संज्ञक होम** इसके बाद निम्नलिखित तेरह (१३) मन्त्रों से आहुति प्रदान करे।

१. ॐ चित्तं च स्वाहा। इदं चित्ताय न मम।
२. ॐ चित्तिश्च स्वाहा। इदं चित्त्यै न मम।
३. ॐ आकूतं च स्वाहा। इद माकूताय न मम।
४. ॐ आकूतिश्च स्वाहा। इद माकूत्यै न मम।
५. ॐ विज्ञातश्च स्वाहा। इदं विज्ञाताय न मम।
६. ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा। इदं विज्ञातये न मम।
७. ॐ मनश्च स्वाहा। इदं मनसे न मम।
८. ॐ शक्वरीश्च स्वाहा। इदं शक्वरीभ्यो न मम।
९. ॐ दर्शश्च स्वाहा। इदं दर्शाय न मम।
१०. ॐ पौर्णमासं च स्वाहा। इदं पौर्णमासाय न मम।
११. ॐ बृहच्च स्वाहा। इदं बृहते न मम।
१२. ॐ रथन्तरं च स्वाहा। इदं रथन्तराय न मम।
१३. ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

- वर कन्या प्रणीता के जल का स्पर्श करे और अपने ऊपर छिडके।
  - मन्त्र **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं भवति वारणम्।**
    तथा देवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिणा॥

- **अभ्यातान होम** इसके बाद निम्नलिखित अट्ठारह (१८) मन्त्रों से आहुति प्रदान करे।

१. **ॐ अग्निर्भूताना मधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा।** इदं अग्नये भूताना-मधिपतये न मम।
२. **ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा।** इदं इन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।
३. **ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा।** इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम।

- वर कन्या प्रणीता के जल का स्पर्श करे और अपने ऊपर छिडके।
  - मन्त्र **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं भवति वारणम्।**
    तथा देवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिणा॥

४. **ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा।** इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये न मम।

५. **ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न मम।

६. **ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहुत्या ॶ स्वाहा।** इदं चन्द्रमसे नक्षात्राणामधिपतये न मम।

७. **ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहुत्या ॶ स्वाहा।** इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम।

८. **ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम।

९. **ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहुत्या ॶ स्वाहा।** इदं वरुणायापामधिपतये न मम।

१०. **ॐ समुद्रः स्त्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये न मम।

११. **ॐ अन्न ॶ साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं अन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम।

१२. **ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं सोमायौषधीनामधिपतये न मम।

१३. **ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम।

१४. **ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-मशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम।

- इसके बाद प्रणीता के जल से दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों को प्रक्षालित करे।

१५. **ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्या देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम।

१६. **ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम।

१७. **ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षतरेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्या देवहूत्या ॶ स्वाहा।** इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न मम।

१८. **ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहाः। इह मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॶ स्वाहा।**
इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम।

- पुनः प्रणीता के जलसे दाहिने हाथ की अंगुलियों को प्रक्षालित करे।

- **आज्य होम** निम्न लिखित पाँच (५) मन्त्रों से घी की पाँच आहुति दे।

१. **ॐ अग्नि रैतु प्रथमो देवताना ७ सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्।**
तदय ७ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेय ७ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा॥
इदं अग्नये न मम।

२. **ॐ इमा मग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः।**
अशून्योपस्था जीवता मस्तु माता पौत्रमानन्द मभि विबुध्यता मिय ७ स्वाहा।
इदं अग्नये न मम।

३. **ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र।**
यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र ७ स्वाहा॥
इदं अग्नये न मम।

४. **ॐ सुगं नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः।**
अपैतु मृत्युरमृतन्न आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा॥
इदं वैवस्वताय न मम।

- पुनः प्रणीता के जल से दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों का प्रक्षालन करे।

- **अन्तःपट हवन** वर-वधू और अग्नि के बीच में पीला कपड़ा तानकर पर्दा कर दे।
- यह आहुति मृत्यु देवता के लिये है, इसको वर-कन्या न देखने पायें, इसलिये अग्नि और वर-कन्या के बीच में कपड़ा तानने का विधान है।

५. **ॐ परं मृत्यो ऽअनुपरे हि पन्थां यस्तेऽ अन्य इतरो देवयानात्।**
चक्षुष्पते श्रृण्वते ब्रवीमि मा नः प्रजा ७ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा॥
इदं मृत्यवे न मम।

- वर कन्या प्रणीता के जल का स्पर्श करे और अपने ऊपर छिडके।
  - मन्त्र **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं भवति वारणम्।**
  तथा देवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिणा॥

॥ लाजा होम ॥

- लोकाचार के अनुसार कन्या को आगे और वर को कन्या के पीछे पूर्वाभीमुख कर के खड़ा करे।
- वर की अंजलि के ऊपर कन्या की अंजलि रखे।
- कन्या का भाई धान का लावा (खील) एक शूर्प (सूप) में रख दे। फिर उन खीलों के चार भाग करे। उनमें से एक-एक भाग को अलग-अलग अंजलि से कन्या की अंजलि में डाले।
- कन्या अपनी अंजलि में प्राप्त खीलों को वर के हाथ में दे दे।

१. लाजा होम वर निम्न मन्त्र से अंजलि में रखे लावा से तीन (३) बार आहुति दे।

१. **ॐ अर्यमणं देवं कन्याऽऽग्निमयक्षत।**
स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा॥ इदं अर्यम्णे न मम।

२. **ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।**
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

३. **ॐ इमां लाजा नाव पाम्यग्नौ समृद्धि करणं तव।**
मम तुभ्यं च संवननं तदग्नि रनु मन्यता मिय ७ स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

- **अंगुष्ठ ग्रहण** वर वधू के दाहिने हाथ का अँगूठा पकडे और मन्त्र पढ़े।

१. **ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।**
भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यन्त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः॥

२. **ॐ अमोऽह मस्मि सा त्व ७ सा त्वमस्यमोऽहम्।**
सा माहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्॥

३. **ॐ तावेवि विवहावहै सह रेतो दधावहै।**
प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्॥

४. **ॐ ते सन्तु जरदष्टयः सं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।**
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ श्रृणुयाम शरदः शतम्॥

- **अश्मा-रोहण** अग्नि के उत्तर पूर्वमुख खड़ी हुई वधू का पहले से रखे हुए पत्थर पर वर दाहिना पैर रखवाये और निम्नलिखित मन्त्र पढ़े।
  - **मन्त्र** **ॐ आ रोहे ममश्मान मश्मेव त्व ७ स्थिरा भव।**
  अभितिष्ठ पृतन्यतोऽ वबाधस्व पृतनायतः॥

- **गाथा गान** वधू के पत्थर पर पैर रखे रहने पर ही वर निम्नलिखित मन्त्र पढे।

ॐ सरस्वति प्रेद-मव सुभगे वाजिनी वती,
यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजाया मस्याग्रतः।
यस्यां भूत ७ सम भवद् यस्यां विश्व मिदं जगत्,
ता मद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा मुत्तमं यशः॥

- परिक्रमा - १ — आगे वधू पीछे वर अग्नि की एक परिक्रमा करे।
  - मन्त्र — **ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्यां वहतु ना सह।**
    पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह॥

२. लाजा होम — द्वितीय बार वर-वधु परिक्रमा के बाद अपने-अपने स्थान पर खडे हों और लावा से तीन (३) बार आहुति दे।

१. **ॐ अर्यमणं देवं कन्याऽऽग्निमयक्षत।**
स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा॥ इदं अर्यम्णे न मम।

२. **ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।**
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

३. **ॐ इमां लाजा नाव पाम्यग्नौ समृद्धि करणं तव।**
मम तुभ्यं च संवननं तदग्नि रनु मन्यता मिय ७ स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

- अंगुष्ठ ग्रहण — वर फिर वधू के दाहिने हाथ का अँगूठा पकडे और मन्त्र पढ़े।

१. **ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।**
भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यन्त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः॥

२. **ॐ अमोऽह मस्मि सा त्व ७ सा त्वमस्यमोऽहम्।**
सा माहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्॥

३. **ॐ तावेवि विवहावहै सह रेतो दधावहै।**
प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्॥

४. **ॐ ते सन्तु जरदष्टयः सं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।**
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ श्रृणुयाम शरदः शतम्॥

- अश्मा-रोहण — वर फिर वधू का दाहिना पैर पत्थर पर रखा के नीचे का मन्त्र पढे।
  - मन्त्र — **ॐ आ रोहे ममश्मान मश्मेव त्व ७ स्थिरा भव।**
    अभितिष्ठ पृतन्यतोऽ वबाधस्व पृतनायतः॥

- गाथा गान — वधू के पत्थर पर पैर रखे रहने पर ही वर निम्नलिखित मन्त्र पढे।
  ॐ सरस्वति प्रेद-मव सुभगे वाजिनी वती,
  यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजाया मस्याग्रतः।
  यस्यां भूत ७ सम भवद् यस्यां विश्व मिदं जगत्,
  ता मद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा मुत्तमं यशः॥

- परिक्रमा - २ — आगे वधू पीछे वर अग्नि की एक परिक्रमा करे।
  - मन्त्र — **ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्यां वहतु ना सह।**
    पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह॥

३. लाजा होम

तीसरी बार वर-बधु परिक्रमा के बाद अपने-अपने स्थान पर खडे हों और लावा से तीन (३) बार आहुति दे।

१. **ॐ अर्यमणं देवं कन्याऽऽग्निमयक्षत।**
स नो अर्यमा देव: प्रेतो मुञ्चतु मा पते: स्वाहा॥ इदं अर्यम्णे न मम।

२. **ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।**
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

३. **ॐ इमां लाजा नाव पाम्यग्नौ समृद्धि करणं तव।**
मम तुभ्यं च संवननं तदग्नि रनु मन्यता मिय ७ स्वाहा॥ इदं अग्नये न मम।

- अंगुष्ठ ग्रहण

वर फिर वधू के दाहिने हाथ का अँगूठा पकडे और मन्त्र पढ़े।

१. **ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथास:।**
भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यन्त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवा:॥

२. **ॐ अमोऽह मस्मि सा त्व ७ सा त्वमस्यमोऽहम्।**
सा माहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्॥

३. **ॐ तावेवि विवहावहै सह रेतो दधावहै।**
प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्॥

४. **ॐ ते सन्तु जरदष्टय: सं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।**
पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद: शत ७ श्रृणुयाम शरद: शतम्॥

- अश्मा-रोहण

वर फिर वधू का दाहिना पैर पत्थर पर रखा के नीचे का मन्त्र पढे।

  - मन्त्र

ॐ आ रोहे ममश्मान मश्मेव त्व ७ स्थिरा भव।
अभितिष्ठ पृतन्यतोऽ वबाधस्व पृतनायत:॥

- गाथा गान

वधू के पत्थर पर पैर रखे रहने पर ही वर निम्नलिखित मन्त्र पढे।

ॐ सरस्वति प्रेद-मव सुभगे वाजिनी वती,
यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजाया मस्याग्रत:।
यस्यां भूत ७ सम भवद् यस्यां विश्व मिदं जगत्,
ता मद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा मुत्तमं यश:॥

- परिक्रमा - ३

आगे वधू पीछे वर अग्नि की एक परिक्रमा करे।

  - मन्त्र

ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्यां वहतु ना सह।
पुन: पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह॥

- अवशिष्ट लाजा होम इस बार सूप के कोने से कन्या का भाई एक ही बार में सब लावा वर-वधू के हाथ में छोड दे। वर निम्न मन्त्र बोलकर एक बारमें सम्पूर्ण हवन करे।
    - मन्त्र **ॐ भगाय स्वाहा।** इदं भगाय न मम।

- **ग्रन्थि बन्धन** चौथी परिक्रमा से पहले वर-वधू की गाँठ बाँध दे।
    - परिक्रमा - ४ वर आगे वधू पीछे हो कर चुपचाप एक परिक्रमा करे।

- प्राजापत्य होम पुनः बैठकर ब्रह्मा से अन्वारब्ध होकर घी से हवन करे। स्त्रुवा में बचे हुए घी को प्रोक्षणी पात्र में छोड़े।
    - मन्त्र **ॐ प्रजापतये स्वाहा।** इदं प्रजापतये न मम।

॥ सप्तपदी ॥

प्राजापत्य होम के अनन्तर अग्नि के उत्तर की ओर ऐपन से उत्तरोत्तर सात मण्डल बनाये या लावा के सात पुंज रख कर ब्राह्मण वर वधू को सप्तपद का क्रमण कराये।

- संकल्प **ॐ अद्येहेत्यादि प्रतिगृहीतायाः स्वदारत्व सिद्ध्यर्थं सप्ताचल पूजनं करिष्ये।**

- मन्त्र **ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे**
  त्वासम्पदसि संपदे त्वा तेजोसि तेजसेत्वा॥

- वर-वधू पहिले दाहिना फिर बायाँ पग धरे। ब्राह्मण निम्न मन्त्र पढे।

१. **ॐ एक मिषे विष्णुस्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे तुम्हारे मनोभिलषित फलों को भगवान् विष्णु तुम्हें प्रदान करेंगे।

२. **ॐ द्वे ऊर्जे विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे तुम्हारे शरीरादि में भगवान् विष्णु सुन्दर बल प्रदान करेंगे।

३. **ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे भगवान् विष्णु तुम्हें धन की वृद्धि करेंगे।

४. **ॐ चत्वारि मायो भवाय विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे भगवान् विष्णु तुम्हें सभी सुख प्रदान करेंगे।

५. **ॐ पञ्च पशुभ्यो विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे भगवान् विष्णु तुम्हें गौ आदि पशुओं की वृद्धि प्रदान करेंगे।

६. **ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे ! इससे भगवान् विष्णु तुम्हें ऋतुओं का उत्तम समय प्राप्त करायेंगे।

७. **ॐ सखे सप्तपदा भव। सा मा मनुव्रता भव। विष्णु स्त्वा नयतु।**
- हे सखे! इससे भगवान् विष्णु तुम्हें सातों लोकों के सुख प्रदान करें।

- सात पग चलने के बाद वर-वधू अपने अपने स्थान पर बैठ जाएँ।

- पहिले कन्या पक्ष के पण्डित कन्या के सात वचनों को कहें।

कन्या के सात वचन

१. पहला वचन

तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञ दानं मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! तीर्थ, व्रत, उद्यापन, यज्ञ, दान आदि सभी धर्म कार्य आप मेरे साथ करें तो मैं आपकी वामांगी बनूँगी। यह कन्या का पहला वचन है।

२. दूसरा वचन

हव्य प्रदानै रमरान् पितृंश्च कव्य प्रदानैर्यदि पूजयेथाः।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं द्वितीयम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप हविष्यान्न देकर देवताओं की, कव्य देकर पितरों की पूजा करें, तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का दूसरा वचन है।

३. तीसरा वचन

कुटुम्ब रक्षा भरणं यदि त्वं कुर्याः पशूनां परिपालनं च।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं तृतीयम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप परिवार की रक्षा और पशुओं का पालन करे तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का तृतीय वचन है।

४. चौथा वचन

आयं व्ययं धान्य धनादिकानां दृष्ट्वा निवेशं प्रगृहं निदध्याः।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं चतुर्थकम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप आय-व्यय और धान्य को भरकर गृहस्थी को सम्हालें, तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का चतुर्थ वचन है।

५. पाँचवाँ वचन

देवालयारामतडागकूप वापी विदध्या यदि पूजयेथाः।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं पंचमम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप देवालय, बाग, कूआं, तालाब, बावड़ी आदि बनवाकर पूजा करें, तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का पंचम वचन है।

६. छठा वचन

देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदा विदध्याः क्रय-विक्रये त्वम्।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं षष्ठम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप अपने नगर में या विदेश में जाकर व्यापार या नौकरी करें तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का षष्ठ वचन है।

७. सातवां वचन

न सेवनीया परिकीयजाया त्वया भवे भाविनि कामनीश्च।
वामांग-मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं सप्तम्॥

- कन्या कहती है कि हे स्वामि ! यदि आप जीवन में कभी पराई स्त्री को स्पर्श नहीं करोगे तो मैं आपके वामांग में आऊँगी। यह कन्या का सप्तम वचन है।

- **वर के मुख्य वचन** **मदीय चित्तानुगतं च चित्तं सदा मदाज्ञा परि पालनंच ।**
  पतिव्रता धर्म-परायणत्वं कुर्याः सदा सर्व मिमं प्रयत्नं ॥
  - मेरे चित्त के अनुसार तुम्हारा चित्त होना चाहिये। तुम्हें मेरी आज्ञा का सदा पालन करना चाहिये। पतिव्रता का पालन करती हुई धर्मपरायण बनो, यह तुम्हें प्रयत्न पूर्वक करना चाहिये।

- **वर के पाँच वचन**

१. पहला वचन **क्रीडा शरीर संस्कार समाजोत् सव दर्शनम् ।**
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषित भर्तृका ॥
- जब तक मैं घर पर रहूँ, तब तक तुम क्रीडा, आमोद-प्रमोद करो, शरीर में उबटन, तेल लगाकर चोटी गुँथो, सामाजिक उत्सवों में जाओ, हँसी-मजाक करो, दूसरे के घर सखी-सहेली से मिलने जाओ, परंतु जब मैं घरपर न रहूं, परदेस में रहू, तब इन सभी व्यवहारों को छोड़ देना चाहिये।

२. दूसरा वचन **विष्णुर्वैश्वानरः साक्षी ब्राह्मणज्ञाति बान्धवाः ।**
पञ्चमं ध्रुवमालोक्य ससाक्षित्वं ममागताः ॥
- विष्णु, अग्नि, ब्राह्मण, स्वजातीय भाई-बन्धु और पाँचवें ध्रुव तारा ये सभी मेरे साक्षी हैं।

३. तीसरा वचन **तव चित्तं मम चित्ते वाचा वाच्चयं न लोपयेत् ।**
व्रते में सर्वदा देयं हृदयस्थं वरानने ॥
- हे सुमुखि ! हमारे चित्त के अनुकूल तुम्हें अपना चित्त रखना चाहिये। अपनी वाणी से मेरे वचनों का उल्लंघन नहीं करना चाहिये। जो कुछ मैं कहूँ, उसको सदा अपने हृदय में रखना चाहिये। इस प्रकार तुम्हें मेरे पातिव्रत्य का पालन करना चाहिये।

४. चौथा वचन **मम तुष्टिश्च कर्तव्या बन्धूनां भक्तिरादरात् ।**
ममाज्ञा परिपाल्यैषा पातिव्रत परायणे ॥
- मुझे जिस प्रकार सन्तोष हो, वही कार्य तुम्हें करना चाहिये। हमारे भाई-बन्धुओं के प्रति आदर के साथ भक्ति-भाव रखना चाहिये। हे पातिव्रत धर्म का पालन करनेवाली ! मेरी इस आज्ञा का पालन करना होगा।

५. पाँचवाँ वचन **विना पत्नीं कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्तते ।**
तस्मात्त्वं मम विश्वस्ता भव वामाङ्गामिनि ॥
- बिना पत्नी के गृहस्थ धर्म का पालन नहीं हो सकता, अत: तुम मेरे विश्वास का पात्र बनो। अब तुम मेरी वामांगी बनो अर्थात् मेरी पत्नी बनो।

- **जलाभिषेक** तदनन्तर अग्नि के पश्चम बैठ कर दृढ़ पुरुष के कन्धे पर रखे हुए घड़े से आम्रपल्लव या कुशा द्वारा जल लेकर वर-वधू के मस्तक पर निम्न मन्त्र से जल छिड़के-
  - मन्त्र **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।**

१. **ॐ आपो हिष्ठा मयो-भुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे-रणाय चक्षसे ॥**

२. **ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशती-रिव मातरः ॥**

३. **ॐ तस्मा अरङ्ग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥**

- **सूर्य दर्शन** यदि दिन का विवाह हो तो वर-वधू सूर्य को देखो, क्योंकि यह तुम्हारे विवाह का साक्षी है - **सूर्यमुदीक्षस्व** ।
  - मन्त्र **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥**

- **ध्रुव दर्शन** यदि रात्रि का विवाह हो तो वर-वधू ध्रुव दर्शन करे ।
  - वर-वधु से कहे **ध्रुवमुदीक्षस्व ।**
  - वधू-वर से कहे **ध्रुवं पश्यामि ।**
  - मन्त्र **ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि ।**
    मह्यं त्वाऽदात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम् ॥
  - यहाँ वधू को ध्रुव चाहे दिखता न भी हो, परंतु यही कहे कि मैं ध्रुव को देखती हूँ अर्थात् मन से ध्रुव का ध्यान करती हूँ ।

- **हृदयालम्भन** वर-वधू के दाहिने कन्धे पर से हाथ ले जाकर वधू के हृदय का स्पर्श करे ।
  - मन्त्र **ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम-चित्त मनु-चित्तं तेऽ अस्तु ।**
    मम वाचमेकमना जुषस्व । प्रजा पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

- वधूर्वरस्य वाम भागं उपविश्यति कन्या को वर की बाई तरफ बैठा दे ।

- **सिन्दूर दान (सुमंगली)**
- लोकाचार में वर का पिता पुरोहित को दक्षिणा देकर उनसे सिन्दूर ग्रहण करे ।
- सिन्दूरदान के पहले सिंधोरा से वर का पिता पूर्व मुख होकर पर्दा करके ५ चुटकी सिन्दूर अपने कुल देवताओं के लिये निकाले और **कुलदेवीभ्यो नमः** कहकर समर्पित करे ।
- इसके बाद वर सिन्दूर लेकर गणेश जी को चढ़ाकर अनामिका अंगुलि का अग्रभाग से या सोने की अंगूठी से वधू की माँग में अभिमन्त्रण कर सिन्दूर छोड़े ।
  - मन्त्र **ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमाः समेत पश्यत ।**
    सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथाऽस्तं विपरेत न ॥

- **सिन्दूर करण (माँग बहोरन)** वधू को वर के बाँयी ओर बैठाये और सौभाग्यवती स्त्रियाँ (कन्या की बुआ, बडी बहन या बडी भौजाई) वधू की माँग में सिन्दूर लगाती है, जिसे 'सिन्दूर बहोरन' या 'माँग बहोरन' कहते हैं।

- **ग्रन्थि बन्धन** पुरोहित वधू के उत्तरीय में फल, अक्षत, पुष्प, द्रव्य आदि बाँधकर वर के उत्तरीय से ग्रन्थिबन्धन करे।
  - मन्त्र **यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।**
    तन्म आ बध्नामि शतशासरदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ यजु० ३४।५२

- **स्विष्टकृत् हवन** यह आहुति ब्रह्मा से सम्बन्ध रखकर की जाती है।
  - मन्त्र **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।**

- **संस्त्रव प्राशन** प्रोक्षणीमें छोड़े गये घृत का प्राशन कर आचमन करे, हाथ धो ले।

- **ब्रह्म ग्रन्थि विमोक** कुशा में ब्रह्मा की जो गाँठ थी उसे खोल दे।

- **मार्जन** पवित्री को लेकर निम्न मन्त्र से प्रणीता के जल से सिर पर मार्जन करे।
  - मन्त्र **ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु**

- **प्रणीता विमोक** प्रणीतापात्र को अग्नि के पश्चिम या ईशान कोण में उलटकर रख दे।
  - मन्त्र **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।**

- **पवित्रप्रतिपत्ति** इसके बाद उस पवित्री को अग्नि में छोड़ दे।

- **पूर्णपात्र दान** ब्रह्मा को देने के लिये निम्न संकल्प वाक्य से पूर्णपात्र-दान का संकल्प करे-
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतैतद् विवाह होम कर्मणि कृताऽकृतावेक्षण रूप-कर्म-प्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति दैवतं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
  - ब्रह्मा उसे लेकर कहे **ॐ स्वस्ति।**

- **मार्जन** उपयमन कुशा द्वारा उलटकर रखे गये प्रणीता के जलसे निम्न मन्त्र से मार्जन करे।
  - मन्त्र **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।**
  - उपयमन कुशों को अग्नि में छोड़ दे।

- वेदी के चारो तरफ जो कुशा कुशकण्डिका के समय रखे गये है उन सब को घी में डुबोकर अग्नि में छोड दे।
  - मन्त्र **ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातु मित।**
    मन सस्पत इमं देव यज्ञ ७ स्वाहा वातेधाः स्वाहा॥

- **त्र्यायुष्करण** होम की भस्म को स्त्रुवे से उठाकर दाहिने हाथ की अनामिका से भस्म लगाये।
  - **ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः** ललाट में भस्म लगाये।
  - **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्** कण्ठ में भस्म लगाये।
  - **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्** दाहिने कन्धे पर भस्म लगाये।
  - **ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** हृदय में भस्म लगाये।

- **अभिषेक** आचार्य स्थापित दृढ पुरुष के कलश के जल से दुर्वा-कुश अथवा पंचपल्लव से निम्न मन्त्रों द्वारा वर-वधू का अभिषेक करे।
  - **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।**
    सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥ १॥
  - **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।**
    सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥ ॥ २॥
  - **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।**
    अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन
    वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि ॥३॥

  - **गणाधिपो भानुशशी धरा सुतो, बुधो गुरु र्भार्गव सूर्य नन्दनौ।**
    राहुश्च केतु प्रभृति र्नवग्रहाः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोररथं सदा ॥ ॥ १ ॥
  - **उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो, धर्मो यमो वायु हरिश्चतुर्भुजः।**
    गन्धर्व यक्षो रग सिद्ध चारणाः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा ॥ ॥ २ ॥
  - **नलो दधीचिः सगरः पुरूरवाः, शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः।**
    राम त्रयं वैन्य बलि युधिष्ठिरः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा ॥ ॥ ३ ॥
  - **मनु र्मरीचि र्भृगु-दक्ष-नारदाः, पराशरो व्यास वसिष्ठ भार्गवाः।**
    वाल्मीकि कुम्भोद्भव गर्ग गौतमाः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा ॥ ४ ॥
  - **रम्भा शची सत्यवती च देवकी, गौरी च लक्ष्मी अदितिश्च रुक्मिणी।**
    कूर्मो गजेन्द्रः सचराचरा धरा, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा ॥ ॥ ५ ॥
  - **गङ्गा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती, गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा।**
    सा चन्द्रभागा वरुणा असी नदी, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा ॥ ॥ ६ ॥
  - **तुङ्ग प्रभासो गुरु-चक्र पुष्करं, गया विमुक्तो बदरी बटेश्वरः।**
    केदार पम्पासुर नैमिषारकं, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथ सदा ॥ ॥ ७ ॥
  - **शङ्खश्च दुर्वा सित-पत्र-चामरं, मणिः प्रदीपो वर-रत्न-काञ्चनम्।**
    सम्पूर्ण कुम्भैः सहितो हुताशनः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोररथं सदा ॥ ॥ ८ ॥
  - **प्रयाण-काले यदि वा सुमङ्गले, प्रभात काले च नृपाभिषेचने।**
    धर्मार्थ कामाय नरस्य भाषितं व्यासेन सम्प्रोक्त मनोरथं सदा ॥ ॥ ९ ॥

- **गोदी भरना - २** वर के पिता फल-मेवा-गरीगोला-द्रव्य लेकर वधू की गोद भरे।
  - मन्त्र **ॐ मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा: ।**
    शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तु ॥

- **दूर्वाक्षतारोपण** अन्य स्त्री-पुरुष पुष्प या लावा हाथ में लेकर आचार्य के द्वारा कहे जाते हुए मन्त्रों के अन्त में आशीर्वचन पूर्वक वधू और वर के ऊपर पुष्प या लावा छोड़ें।
  - मन्त्र **ॐ सौभाग्यमस्तु कल्याणमस्तु ।**

- आचार्य वर-वधू को तिलक लगाये।
- देशाचार से नीराजन करे और वर के पिता आदि वधू की गोद भरें।
- वर-वधू संकल्प पूर्वक संक्षेप में गणेश आदि आवाहित देवताओं की उत्तरपूजा करें।

- **आचार्य दक्षिणा** आचार्य को दक्षिणा देने के लिये संकल्प करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतैतद् विवाह कर्मण: साङ्गता सिद्धयर्थं आचार्याय मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ।**

- **ब्राह्मण भोजन** ब्राह्मण भोजन कराने के लिये संकल्प करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतस्य विवाह कर्मण: साङ्गता सिद्ध्यर्थं यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ।**

- **भूयसी दक्षिणा** भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतैतद् विवाह कर्मण: साङ्गता सिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यून अतिरिक्त दोष परिहारार्थं नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये ।**

- **विष्णु स्मरण** वर हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर आवाहित देवताओं का विसर्जन करे।
  - मन्त्र **प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।**
    स्मरणा देव तद् विष्णो: सम्पूर्णं स्यादिति श्रुति: ॥
    यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।
    न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
    ॐ विष्णवे नम: । ॐ विष्णवे नम: । ॐ विष्णवे नम: ।

- **गुप्तागार गमन** वर और वधू गुप्तागार (कोहबर) - में जायँ, वहाँ आसन पर बैठें तथा वर मन्त्र पढ़े-
  - मन्त्र **ॐ इह गावो निषीदन्त्विहाश्वा ऽ इह पूरुषा:।**
    इहो सहस्त्र दक्षिणो यज्ञऽ इह पूषा निषीदतु ॥

॥ इति विवाह कर्म पद्धति समाप्त ॥

॥ गोने की प्रक्रिया ॥

- वर वधू को बैठा कर गौर गणेश कलश नवग्रह की पूजा कराने के बाद चाँदी की बिछिया अँगूठा कलश में छुआ कर कोई सौभाग्यवती स्त्री कन्या को पहनावे।
- अक्षत-सुपारी व द्रव्य रखकर दोनों की गाँठ बाँधे और कन्या को वाम भाग में बैठावें।
- नई दौरी में चनादाल-चावल की खिचड़ी के साथ गुड़-हल्दी-सुपारी व द्रव्य लेकर ऊपर वधू की तथा नीचे वर की अँजुली बनाकर पाँच अँजुली भरावे।

    - मन्त्र **ॐ प्रथमोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सीता रामाभि वन्दितः।**
      सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्॥ ॥ १ ॥
      - **ॐ द्वितीयोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सत्या कृष्णाभि वन्दितः।**
        सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्॥ ॥ २ ॥
      - **ॐ तृतीयोऽञ्जलिरियं पूर्वम् गौरी शंकर वन्दितः।**
        सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्॥ ॥ ३ ॥
      - **ॐ चतुर्थोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सावित्री ब्रह्म पूजितः।**
        सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्॥ ॥ ४ ॥
      - **ॐ पंचमोऽञ्जलिरियं पूर्वम् कुन्ती पाण्डु प्रपूजितः।**
        सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्॥ ॥ ५ ॥

- ऊपर वर की तथा नीचे वधू की अँजुली करके निम्न मन्त्र से दो अँजुरी भरावे।
    - मन्त्र **ॐ वागर्थाविव संपृक्ती वागर्थाविव प्रतिपत्तये।**
      जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥

- लोकाचार में इन सातों अँजुरी की खिचड़ी वर के पिता को दी जाती है।
- फिर वर-वधू के हाथ में छुआकर दो-दो अँजुरी खिचड़ी दोनों ओर के ब्राह्मण को तथा एक-एक अंजुरी नाऊ व एक अँजुरी भाँट को दी जावे।
- ब्राह्मण को दक्षिणा व नाई को न्यौछावर देकर वर-वधू को कोहबर में भेज दे।

॥ कंगन खोलना ॥

- वर-वधू को बिठाकर गौर-गणेश-कलश-नवग्रह की पूजा कराये।
- वधू के हाथ में बँधे कंकण (कंगन) खोल दे।

- मन्त्र **ॐ कंकणं मोचयाम्यद्य रक्षोघ्नं रक्षणं मम।**
  मयि रक्षां स्थिरां कृत्वा स्व-स्थानं गच्छ कंकण॥

- कंगन खोलकर गौर के पास रख दे।
- वधू गौर को सिन्दूर चढ़ाकर सोहाग ले ले।
- ब्राह्मण वर के तिलक कर दें, वधू की गोद भर दे।
- ग्रन्थि विमोक वर-वधू की बँधी हुई ग्रन्थि (गाँठ) को खोल दे।
- ब्राह्मण को दक्षिणा, नाई को न्यौछावर दे।
- देवताओं का विसर्जन कर वर-वधू आसन से उठकर बड़े-बूढ़ों का पाव छुवे।

॥ वर-वधू के तीन रात पालनीय नियम ॥

- विवाह के बाद तीन दिन तक क्षार तथा लवण रहित भोजन करें।
- भूमि पर शयन करें।
- एक साथ शयन न करें।

॥ चतुर्थी कर्म ॥

- विवाह के अनन्तर चतुर्थी-होम कर्म आवश्यक कर्म बताया गया है, जो विवाह संस्कार का महत्त्वपूर्ण अंग है।

  - श्लोक **चतुरशीति दोषाणि कन्या देहे तु यानि वै।**
    प्रायश्चित्त करं तेषां चतुर्थी कर्म ह्याचरेत्॥ मार्कण्डेय
    - चतुर्थी कर्म के प्रयोजन में बताया गया है कि कन्या के देह में चौरासी दोष होते हैं, उन दोषों की निवृत्ति के लिये प्रायश्चित्त स्वरूप चतुर्थी कर्म किया जाता है।

चतुर्थी कर्म से सोम, गन्धर्व तथा अग्नि द्वारा कन्या भुक्त दोष का परिहार हो जाता है। हारीत ऋषि ने बताया है कि जो कन्या चतुर्थीकर्म करती है, वह सदा सुखी रहती है, धन- धान्य की वृद्धि करने वाली होती है और पुत्र पौत्र की समृद्धि देनेवाली होती है।

शास्त्र में यह भी बताया गया है कि चतुर्थी कर्म न करने से वन्ध्यात्व और वैधव्य दोष आता है। चतुर्थी कर्म से पूर्व उसका पूर्ण भार्यात्व भी नहीं होता है।

  - श्लोक **अप्रदानात् भवेत् कन्या प्रदानानन्तरं वधूः।**
    पाणिग्रहे तु पत्नी स्याद् भार्या चातुर्थि कर्मणि॥
    - जब तक विवाह नहीं होता है, उसकी कन्या संज्ञा होती है, कन्यादान के अनन्तर वह वधू कहलाती है, पाणिग्रहण होने पर पत्नी होती है और चतुर्थी कर्म होने पर भार्या कहलाती है।

  - श्लोक **विवाहे चैव निर्वृत्ते चतुर्थेऽहनि रात्रिषु।**
    एकत्वमागता भर्तुः पिण्डे गोत्रे च सूतके॥ भवदेवभट्ट द्वारा उद्धत मनु का वचन
    - विवाह सम्पन्न होने पर चौथे दिन रात्रि में पति के देह, गोत्र और सूतक में स्त्री की एकता हो जाती है।

  - श्लोक **चतुर्थी होम मन्त्रेण त्वङ्मांस हृदयेन्द्रियैः।**
    भर्त्रा संयुज्यते पत्नी तद्गोत्रा तेन सा भवेत्॥ बृहस्पति
    - चतुर्थी होम के मन्त्रों से त्वचा, मांस, हृदय और इन्द्रियों के द्वारा पत्नी का पति से संयोग होता है, इसी से वह पतिगोत्रा हो जाती है-

अत: विवाह के दिन से चौथे दिन रात्रि में अर्धरात्रि बीत जाने पर यह कर्म करना चाहिये अथवा अशक्त होने पर अपकर्षण करके विवाह के अनन्तर उसी दिन रात्रि में उसी विवाहाग्नि में विना कुशकण्डिका किये यह कर्म किया जा सकता है।

॥ चतुर्थी कर्म - प्रयोग ॥

- वर-वधू मंगल स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण कर पूर्वाभि-मुख हो आसन पर बैठ जायँ।
- वर वधू को अपने दक्षिण भाग में बैठा ले।
- आचमन, प्राणायाम आदि करके गणेशादि देवों का स्मरण कर हाथ में कुशाक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

- संकल्प — **ॐ अद्य अस्या मम पत्न्याः सोम गन्धर्वाग्न्युप भुक्तत्व दोष परिहार द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं विवाहाङ्क भूतं चतुर्थीहोमं करिष्ये।**

- एक वेदी का निर्माण कर उसके पंचभूसंस्कार कर ले तथा शिखि नामक अग्नि स्थापित कर यथा विधि कुशकण्डिका सम्पादित करे।
- चरु (खीर)-का पाक बना ले।
- ब्रह्मा-आचार्य का वरण कर अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा को बैठाकर उत्तर की ओर एक जलपात्र का स्थापन करे।
- निम्न मन्त्रों से घी से हवन करे, आहुति के अनन्तर स्रुव में बचे घी को प्रोक्षणी पात्र में छोड़ता जाय।

• **आघार**	**ॐ प्रजापतये स्वाहा।**	इदं प्रजापतये न मम।
	ॐ इन्द्राय स्वाहा।	इदं इन्द्राय न मम।
• **आज्यभाग**	**ॐ अग्नये स्वाहा।**	इदं अग्नये न मम।
	ॐ सोमाय स्वाहा।	इदं सोमाय न मम।

- **प्रधान-होम** — घी से निम्न पाँच आहुतियाँ दे। आहुतियों को देने के बाद स्रुव में बचा हुआ घी उत्तर दिशा में स्थापित जलपात्र में छोड़े, प्रोक्षणीपात्र में नहीं।

१. **ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।** इदं अग्नये न मम।

२. **ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।** इदं वायवे न मम।

३. **ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम।

४. **ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।** इदं चन्द्राय न मम।

५. **ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।** इदं गन्धर्वाय न मम।

- इसके बाद स्थाली पाक चरु (खीर) से हवन करे, खीर में थोड़ा घी छोड़ दे।
  - **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥**
  - यह मन से कहे बचा चरु एवं घी जलपात्र में छोड़े।

- इसके बाद घी और स्थालीपाक (चरु) से स्विष्टकृत् हवन करे।
  - **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।**

- **नव आहुति** पुनः घीसे हवन करे, प्रत्येक आहुतिसे बचा घी प्रोक्षणीपात्रमें छोड़ता जाय-

१. **ॐ भूः स्वाहा।** इदं अग्नये न मम।
२. **ॐ भुवः स्वाहा।** इदं वायवे न मम।
३. **ॐ स्वः स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम।
४. **ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वारन् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ७ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत्स्वाहा।** इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।
५. **ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुण ७ रराणो वीहि मृडीक ७ सुहवो न एधि स्वाहा।** इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।
६. **ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ स्वाहा।** इदं अग्नये अयसे न मम।
७. **ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥**
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।
८. **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धमं वि मध्यम ७ श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥** इदं वरुणायादित्यादितये न मम।
९. **ॐ प्रजापतये स्वाहा।** इदं प्रजापतये न मम।

- **संस्रवप्राशन** प्रोक्षणीपात्र में पड़े घी का प्राशन कर आचमन करे, फिर हाथ धो ले।

- **मार्जन** पवित्री को लेकर निम्न मन्त्र से प्रणीता के जल से सिर पर मार्जन करे।
  - मन्त्र **ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु**
    - पवित्री को अग्नि में छोड़ दे।

- **पूर्णपात्रदान** ब्रह्मा को पूर्णपात्रदान करने के लिये हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प करे।
  - संकल्प **ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच् चतुर्थीहोम कर्मणि कृता-कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं सदक्षिणाकं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतम् अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रदे।**
  - ब्रह्मा को दक्षिणा सहित पूर्णपात्र दे। ब्रह्मा कहे **ॐ स्वस्ति।**

- **प्रणीताविमोकः** ईशानकोण में प्रणीतापात्र को उलट दे और उपयमन कुशों को अग्निमें छोड़ दे। कुश में लगी ब्रह्मग्रन्थि खोल दे।

- **अभिषेक** वरुण कलश से जल लेकर आम्रपल्लव से वर-वधू के सिरपर अभिषेक करे।
  - मन्त्र **ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाध्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूः। जारघ्नीं ततऽ एनां करोमि। सा जीर्य त्वं मया सह श्री अमुकि देवि।**

- **स्थालीपाक** निम्न चार मन्त्रों द्वारा वर वधू को स्थालीपाक (चरु-खीर)-का प्राशन कराये।
  - **ॐ प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि।**
  - **ॐ अस्थिभिस्तेऽअस्थीनि सन्दधामि।**
  - **ॐ मा ७ सैर्मा ७ सानि सन्दधामि।**
  - **ॐ त्वचा ते त्वचं सन्दधामि।**

- **हृदयस्पर्श** वधू के हृदय का स्पर्श कर वर निम्न मन्त्र पढ़े।
  - मन्त्र **ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ शृणुयाम शरदः शतम्॥**

- **कंकण मोक्षण** वर निम्न मन्त्र से वधू के हाथ में बँधे कंकण को खोलकर माता को दे दे।
  - मन्त्र **कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षोघ्नं रक्षणं मम। मयि रक्षां स्थिरां कृत्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण॥**

- **ग्रन्थिविमोक** वर वधू की बँधी हुई ग्रन्थि (गाँठ) -को खोल दे।

- **त्र्यायुष्करण** स्रुवा से भस्म लेकर दाहिने हाथ की अनामिका से निम्न मन्त्रों से भस्म लगाये।
  - **ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ललाटमें भस्म लगाये।**
  - **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् कण्ठ में भस्म लगाये।**
  - **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् दक्षिण कन्धे पर भस्म लगाये।**
  - **ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् हृदय में भस्म लगाये।**

- **दक्षिणादान** निम्न संकल्प का उच्चारण कर आचार्य को दक्षिणा प्रदान करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतैतच् चतुर्थी-कर्म साङ्गता सिद्ध्यर्थ गोनिष्क्रय भूतां दक्षिणां अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- **ब्राह्मणभोजन** निम्न संकल्प बोलकर ब्राह्मण भोजन कराने का संकल्प करे।
  - संकल्प **ॐ अद्य कृतस्य चतुर्थीकर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थ यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**
- **भूयसी दक्षिणा** **ॐ अद्य कृतैतच् चतुर्थी-कर्म साङ्गता सिद्ध्यर्थ न्यूनाऽतिरिक्त दोष परिहारार्थं भूयसीं दक्षिणां विभज्य नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे।**
- **विष्णुस्मरण**

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्ण-स्या दिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

॥ ग्रह-पूजा-दान-सङ्कल्प ॥

- **सूर्य पूजा दान** वर हाथ में जलाक्षत तथा सूर्यपूजादान की सामग्री लेकर सूर्यजनित दोष की निवृत्ति के लिये संकल्प करे।
  - संकल्प **मम अद्य करिष्यमाण विवाह संस्कार कर्मणि जन्मराशेः सकाशान् नामराशेः सकाशाद्वा अमुक अनिष्ट-स्थान-स्थित श्रीसूर्य-जनित-दोष परिहार पूर्वक शुभफल प्राप्त्यर्थं आयु-आरोग्यार्थं श्री सूर्यनारायण प्रीत्यर्थं च इमानि यथाशक्ति दानोपकरणानि अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
    - दान की वस्तुएँ ब्राह्मण के हाथ में दे दे। ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति।**
  - दान की प्रतिष्ठा के लिये जलाक्षत तथा दक्षिणा लेकर पुनः संकल्प करे।
  - संकल्प **अद्य कृतैतत् श्रीसूर्यदान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय दातु-मह-मुत्-सृज्ये।**
    - दक्षिणा ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति।**
  - सूर्यदान सामग्री **कौसुम्भवस्त्रं गुड-हेम-ताम्रं माणिक्य गोधूम सुवर्णपद्म्।**
    सवत्स गोदानमितिप्रणीतं दुष्टाय सूर्याय मसूरिका च॥ संस्कार भास्कर
    - लालवस्त्र, गुड़, सुवर्ण, ताम्रकलश, माणिक्य (लाल रत्न), गेहूँ, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, मसूरकी दाल, धेनुका मूल्य तथा दान प्रतिष्ठा हेतु द्रव्य।

- **गुरु पूजा दान** कन्या दाता पिता हाथ में जलाक्षत तथा गुरुपूजादान की सामग्री लेकर गुरुजनित दोष की निवृत्ति के लिये संकल्प करे।
  - संकल्प **मम अस्याः कन्यायाः करिष्यमाण विवाह संस्कार कर्मणि जन्मराशेः सकाशान् नामराशेः सकाशाद्वा अमुक-अनिष्ट-स्थान-स्थित श्रीगुरु-जनित-दोष-निवृत्ति-पूर्वक शुभफल प्राप्त्यर्थ सौभाग्य आयु-आरोग्यार्थं श्रीगुरु प्रीत्यर्थ च इमानि यथाशक्ति दान-उपकरणानि अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
    - दान की वस्तुएँ ब्राह्मण के हाथ में दे दे। ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति।**
  - दान की प्रतिष्ठा के लिये जलाक्षत तथा दक्षिणा लेकर पुनः संकल्प करे।
  - संकल्प **अद्य कृतैतत् श्रीगुरु दान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय दातु-मह-मुत्-सृज्ये।**
    - दक्षिणा ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति।**

- गुरुदान सामग्री **अश्वं सुवर्ण मधु पीतवस्त्रं सपीतधान्यं लवणं सपुष्पम् ।**
  सशर्करं तद्व्रजनीप्रयुक्तं दुष्टोपशान्त्यै गुरवे प्रणीतम् ॥ संस्कार भास्कर
  - अश्व का मूल्य, सुवर्ण, मधु, पीतवस्त्र, चने की दाल, सैंधव नमक, पीतपुष्प, मिश्री, हलदी तथा दान प्रतिष्ठा हेतु द्रव्य ।

- चन्द्र पूजा दान सङ्कल्प-कन्या दाता पिता और वर हाथ में जलाक्षत तथा चन्द्र पूजा दान की सामग्री लेकर चन्द्र जनित दोष की निवृत्ति के लिये संकल्प करे ।
  - संकल्प **मम मम अस्याः कन्यायाः** (वर करे तो **मम** बोले) **करिष्यमाण विवाह कर्मणि जन्मराशेः सकाशाच् चतुर्थाद्यनिष्ट स्थान-स्थित-चन्द्रेण सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीय एकादश शुभ-स्थान-स्थित-वदुत्तम-फल-प्राप्त्यर्थं आयु-आरोग्यार्थं श्रीचन्द्रदेव प्रीत्यर्थं च इमानि यथाशक्ति दानोपकरणानि अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राहाणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।**
    - दान की वस्तुएँ ब्राह्मण के हाथ में दे दे । ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति ।**

  - दान की प्रतिष्ठा के लिये जलाक्षत तथा दक्षिणा लेकर पुन: संकल्प करे ।
  - संकल्प **अद्य कृतैतत् श्रीचन्द्र दान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय दातु-मह-मुत्-सृज्ये ।**
    - दक्षिणा ब्राह्मण को दे दे । ब्राह्मण बोले - **ॐ स्वस्ति ।**

- चन्द्रदान सामग्री **घृत कलशं सितवस्त्रं दधिशङ्कं मौक्तिकं सुवर्ण च ।**
  रजतं च प्रदद्याच् चन्द्रारिष्टोपशान्तये त्वरितम् ॥ संस्कार भास्कर
  - सफेद वस्त्र, शंख, मोती, सुवर्ण, चाँदी की मूर्ति, दधि, घृत कलश, चावल तथा दान प्रतिष्ठा हेतु द्रव्य ।

॥ वैधव्य परिहार के उपाय ॥

दैवज्ञद्वारा कथित कन्या के वैधव्य योग के निवारण के लिये अनेक उपाय बताये गये हैं, जिनके यथा विधि अनुष्ठान से वैधव्य रूपी अरिष्ट दूर होता है और सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। इन उपायों में वैधव्य परिहार व्रत, कुम्भ विवाह तथा विष्णु प्रतिमा दान आदि प्रमुख हैं।

यहाँ संक्षेप में इनका विवरण प्रस्तुत है। विशेष के लिये प्रयोग पद्धतियों का अवलोकन करना चाहिये।

- श्लोक **बालवैधव्ययोगेऽपि कुम्भद्रुप्रतिमादिभिः।**
  कृत्वा लग्नं रहः पश्चात्कन्योद्वाह्येति चापरे॥ वीरमित्रोदय संस्कार प्रकाश
  - बाल वैधव्य योग होने पर कुम्भ, अश्वत्थ तथा विष्णु प्रतिमा से विवाह के अनन्तर कन्या का विवाह करना चाहिये।

• वैधव्य परिहार व्रतः

वीर मित्रोदय संस्कार प्रकाश में बताया गया है कि वट-सावित्री आदि व्रतों को जो स्त्रियाँ भक्ति पूर्वक करती हैं, वे सौभाग्यशालिनी होती हैं और सुलक्षण सन्तान को प्राप्त करती हैं। यदि कन्या की कुण्डली में बाल-वैधव्य-योग हो तो उसे दूर करने के लिये पिता को चाहिये कि किसी शुभ मुहूर्त में वस्त्रालंकार से विभूषित कन्या को घर से बाहर किसी अश्वत्थ अथवा शमी वृक्ष के समीप ले जाकर उस वृक्ष के चारों ओर पानी के लिये आलवाल (थाला) बनाये और कन्या आचार्य से संकल्प करवाये कि मैं चैत्र और आश्विन मास में कृष्णपक्ष की तृतीया से एक मास तक अर्थात् वैशाख कृष्ण तृतीया और कार्तिक कृष्ण तृतीया तक प्रत्येक दिन जल से इस वृक्ष का सिंचन करूँगी। ऐसा संकल्प कर वह जल से अश्वत्थ अथवा शमी वृक्ष का आदर भक्ति पूर्वक सिंचन करे। ब्राह्मणों तथा सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन करे उनका आशीर्वाद प्राप्त करे इससे वह सौभाग्य तथा सुख प्राप्त करती है। वह प्रत्येक दिन बाँस के पात्र में भगवती पार्वती की स्वर्णादि की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर चन्दन, अक्षत, दूर्वा, बिल्वपत्र तथा नैवेद्य आदि उपचारों से भक्ति पूर्वक उनकी पूजा करे। इस व्रत के प्रभाव से बाल वैधव्य योग भंग हो जाता है। तदनन्तर पिता को चाहिये कि यथावसर कन्या का किसी सुयोग्य दीर्घायु वर के साथ विवाह करे।

• कुम्भ विवाह

विवाह से पूर्व शुभ मुहूर्त में कन्या का पिता कन्या को लेकर किसी विष्णु मन्दिर में जाकर गणेश आदि का स्मरण कर जल पूर्ण कुम्भ की स्थापना-प्रतिष्ठा कर कलश के ऊपर विष्णु एवं वरुण की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित कर उनका पूजन करे और पूजन कर निम्न मन्त्रों से वरुण तथा विष्णु रूप कुम्भ की प्रार्थना करे।

- श्लोक **वरुणाङ्गस्वरूपस्त्वं जीवनानां समाश्रय।**
  पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु॥
  देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः।

पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं देहि तथा सुखम् ॥

- हे वरुणदेव ! आप समस्त जीवधारियों के प्राण स्वरूप हैं। आप मेरी इस कन्या के पति को दीर्घ आयुवाला बना दें और पुत्र सुख प्रदान करें। इस कन्या की दुःख से रक्षा करें। इस कन्या के पति को चिर-काल तक जीवित रखें तथा सुख प्रदान करें।

इस प्रकार प्रार्थना कर उस कुम्भ के साथ विवाह के समान क्रिया करे और कन्या को त्रिष्णुरूप कुम्भ को समर्पित कर दे। तदनन्तर दस तन्तु वाले सूत के द्वारा कन्या तथा कुंकुमार्चित कुम्भ को आवेष्टित कर दे। फिर उस सूत के बन्धन से कुम्भ को निकालकर किसी तालाब आदि में विसर्जित कर दे। कन्या का जल से अभिषेक करे और आचार्य आदि को दक्षिणा प्रदान कर पुनः कन्या का योग्य वर से विवाह करे।

• अश्वत्थ विवाह

इसी प्रकार अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष की भी पूजा कर विवाह रीति से उसके साथ कन्या का विवाह कर पुनः योग्य वर से कन्या का विवाह किया जाता है। उस समय निम्न मन्त्र से अश्वत्थ की प्रार्थना की जाती है-

- प्रार्थना **नमस्ते विष्णु रूपाय जगदानन्द हेतवे।**
  पितृ देव मनुष्याणामाश्रयाय नमो नमः ॥
  वनानां पतये तुभ्यं विष्णु रूपाय भूरुह ॥

• विष्णु प्रतिमा विवाह

सुवर्ण की विष्णु प्रतिमा बनाकर उसके साथ कन्या का विवाह किया जाता है। (शालग्राम शिला का निषेध है)। विष्णु प्रतिमा की प्रतिष्ठा तथा यथा-विधि पूजन के अन्त में कन्या का पिता प्रार्थना करता है।

- प्रार्थना **देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः।**
  पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरु ॥
  - हे विष्णो ! आप वर दीजिये। हे देव ! मेरी इस कन्या की (वैधव्य) दुःख से रक्षा कीजिये। इस कन्या के पति को दीर्घ आयु प्रदान कीजिये और इसे पुत्र सुख प्रदान कीजिये।

इस प्रकार प्रार्थना कर विवाह विधि से विष्णु प्रतिमा के साथ विवाह कर और **'इमां कन्यां विष्णवे तुभ्यं समर्पयामि'** ऐसा कह कर उन्हें कन्या समर्पित कर दस तन्तु वाले सूत से कन्या तथा प्रतिमा को मन्त्र पूर्वक आवेष्टित करे और फिर उस बन्धन से प्रतिमा को अलग कर दे। ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे तदनन्तर कन्या प्रतिमा दान का संकल्प करे

- संकल्प **ॐ अद्य अमुक-गोत्रा, अमुक-राशिः, अमुकःदेव्यहं मम जन्म-समय वर्तिलग्नादौ स्थितैर्ग्रहादिभिः सूचित्-अरिष्ट निवृत्ति पूर्वक सौभाग्य प्राप्ति द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीतये इमां सौवर्णी सुपूजितां विष्णु प्रतिमां सर्वोपस्करयुताम् अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रदे। ॐ तत्सत् न मम।**

- प्रार्थना करते हुए प्रतिमा आचार्य को समर्पित कर दे।
    - प्रार्थना **यन्मया प्राचि जनुषि घ्नत्या पति समागमम्।**
    विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतो वाति विरक्तया॥
    प्राप्यमाणं महाघोरं यशः सौख्यधनापहम्।
    वैधव्याद्यतिदुःखौघं तन्नाशाय सुखाप्तये॥
    बहु सौभाग्य लब्ध्यै च महा विष्णोरिमां तनुम्।
    सौवर्णीं निर्मितां शक्त्या तुभ्यं सम्प्रददे द्विज॥
        - हे द्विज ! पूर्वजन्म में मेरे द्वारा पति के प्रति विष, शस्त्र आदि के द्वारा अथवा उपेक्षा दिखाने के कारण जो अपराध बना था, उसी पाप के फल स्वरूप मुझे इस जन्म में यश एवं सुख का नाश करने वाला अति भयंकर तथा महान् दुःखों को देनेवाला यह वैधव्ययोग प्राप्त हुआ है, उसके नाश के लिये, सुख की प्राप्ति के लिये तथा अखण्ड सौभाग्य की प्राप्तिके लिये मैं सुवर्ण निर्मित यह महाविष्णु की प्रतिमा आपको प्रदान कर रही हूँ।
- प्रतिमा आचार्य को दे दे।
- कन्या अनघाद्याहमिति अर्थात् मैं आज निष्पाप हो गयी हूँ। यह वचन तीन बार बोले।
- आचार्य प्रतिमा ग्रहण कर 'ॐ अनघा भव' अर्थात् निष्पाप होओ। यह वचन तीन बार बोले।
- इस प्रकार प्रतिमा दान के अनन्तर योग्य वर से कन्या का विवाह करना चाहिये।

- विशेष बात

उपर्युक्त उपायों में यद्यपि सर्वप्रथम कन्या का विवाह कुम्भ, अश्वत्थ तथा विष्णु प्रतिमा के साथ कराया जाता है, तदनन्तर कन्या का योग्य वर से विवाह होता है, जिससे यहाँ पर कन्या के दूसरे विवाह की शंका उत्पन्न होती है, किंतु धर्मशास्त्र ने बताया है कि इसे पुनर्विवाह नहीं माना जाता और न 'पुनर्भू' दोष ही उत्पन्न होता है-

- श्लोक **अत्र च पुनर्भूत्वदोषो न भवति।** वीरमित्रोदय-संस्कार प्रकाश।
- श्लोक **स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी।**
तयोः सह विवाहे च पुनर्भूत्वं न जायते॥ वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाश।
    - विष्णु की स्वर्ण प्रतिमा, कुम्भ तथा अश्वत्थ ये विष्णुरूप होते हैं। अत: इनके साथ विवाह करने पर पुनर्भूत्व दोष उत्पन्न नहीं होता।

॥ शाखोच्चार सम्बन्धी मांगलिक श्लोक ॥

- श्लोक

श्रीमत् पङ्कज विष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः ।
प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः
स्वामी शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

सर्वैश्वर्य सम्पन्न ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव, वायुदेव, देवराज इन्द्र तथा अग्निदेवता, चन्द्रदेवता, भगवान् सूर्य, धनाध्यक्ष कुबेर, वरुण और संयमनीपुरी के स्वामी यमराज, सभी ग्रह, श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न, नल और कूबर, ऐरावत गज, चिन्तामणि रत्न, कौस्तुभमणि, शक्ति को धारण करने वाले स्वामी कार्तिकेय तथा हलायुध बलराम-ये सब आप लोगों का मंगल करें।

- श्लोक

गौरी श्रीः कुलदेवता च सुभगा भूमिः प्रपूर्णा शुभा
सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रता रुन्धती ।
स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्न विध्वंसिनी
वेलाश्चाम्बुनिधेः समीनमकराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

भगवती गौरी (पार्वती), भगवती लक्ष्मी, अपने कुलके देवता, सौभाग्य युक्त स्त्री, सभी धन-धान्य से सम्पन्न पृथ्वीदेवी, ब्रह्मा की पत्नी सावित्री और सरस्वती, कामधेनु, सत्य एवं पातिव्रत्य को धारण करने वाली वसिष्ठ पत्नी अरुन्धती, अग्निपत्नी स्वाहा देवी, कृष्ण पत्नी जाम्बवती, रुक्मभगिनी रुक्मिणीदेवी तथा दुःस्वप्ननाशिनी देवी, मीन और मकरों से संयुक्त समुद्र एवं उनकी वेलाएँ ये सब आपलोगों का मंगल करें।

- श्लोक

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू महेन्द्र तनयाश्चर्मण्वती देविका ।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी
पुण्याः पुण्यजलैः समुद्र सहिताः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

भागीरथी गंगा, सिन्धु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सरयू तथा महेन्द्र पर्वत से निःसृत समस्त नदियाँ, चर्मण्वती, देविका नाम से प्रसिद्ध देवनदी, क्षिप्रा , वेत्रवती (बेतवा), महानदी, गया की फल्गुनदी, गण्डकी या नारायणी - ये सब पुण्य जल वाली पवित्र नदियाँ अपने स्वामी समुद्र के साथ आपलोगों का मंगल करें।

- श्लोक **लक्ष्मीः कौस्तुभ पारिजात कसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः**
  धेनुः कामदुघा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः ।
  अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोऽमृतं चाम्बुधे
  रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

भगवती लक्ष्मी, कौस्तुभ मणि, पारिजात नामक कल्पवृक्ष, वारुणी देवी, वैद्यराज धन्वन्तरि, चन्द्रमा, कामधेनु गौ देवराज, इन्द्र का ऐरावत हस्ती, रम्भा आदि सभी अप्सराएँ, सात मुखवाला उच्चैः श्रवा नामक अश्व, कालकूट विष, भगवान् विष्णु का शार्ंग धनुष, पांचजन्य शंख तथा अमृत - ये समुद्र से उत्पन्न चौदह रत्न आप लोगों का प्रतिदिन मंगल करें।

- श्लोक **ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः**
  शक्रो देवपतिर्हविर्हुतपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः ।
  विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिःशक्तिः पतीनां पतिः
  सर्वे ते पतयः सुमेरु सहिताः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

वेदों के स्वामी ब्रह्मा, पशुपति भगवान् शंकर, ग्रहों के स्वामी भगवान् सूर्य, देवताओं के स्वामी इन्द्र, हव्य पदार्थों में श्रेष्ठ हविर्द्रव्य पुरोडाश, देव सेनापति भगवान् कार्तिकेय, यज्ञों के स्वामी भगवान् विष्णु, पितरों के पति धर्मराज और सभी स्वामियों की स्वामिनी शक्तिस्वरूपा भगवती महालक्ष्मी - ये सभी स्वामिगण पर्वतराज सुमेरुगिरि सहित आप लोगों का मंगल करें।

॥ विवाह मुहूर्त विचार ॥

- विवाह में विहित मास
  - श्लोक **मिथुन कुम्भ मृगाऽलि वृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।**
  अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ मु.चि. - १३

मिथुन, कुम्भ, मकर, बृश्चिक, वृष और मेष इन छे राशियो में सूर्य के रहने पर विवाह होता है। यदि सूर्य मिथुन राशि में रहें तो आषाढ मास के प्रथम त्रिभाग में (शुक्ल पक्ष की परिवा से १० मी तक) वृश्चिक में रहें तो कार्तिक मास में, मकर में रहें तो पौष मास में और मेष राशि में रहें तो चैत्र मास में भी विवाह करना चाहिये।

- जन्म मासादि में विवाह का विधि-निषेध
  - श्लोक **आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोजेन्ममासभतिथौ करग्रहः ।**
  नोचितोऽथ विवुधैः ग्रशस्यते चेद् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥ मु.चि. - १४

यदि वर और कन्या दोनों ही ज्येष्ठ हों तो उनके जन्म-मास, जन्म-नक्षत्र और जन्म-तिथि में विवाह नहीं करना चाहिये। यदि वर-कन्या दोनों द्वितीय गर्भ के हों तो जन्म मासादि में भी विवाह पण्डितों ने पुत्रदायक कहा है। अर्थात् ज्येष्ठ सन्तान का ही जन्म मासादि में विवाह निषेध है, छोटे का नहीं।

- विवाह में ज्येष्ठ मास का विधि-निषेध
  - श्लोक **ज्येष्टद्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदाऽपि ।**
  केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाहुर्नैं वान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ मु.चि. - १५

विवाह में दो ज्येष्ठ (ज्येष्ठ मास और ज्येष्ठ कन्या या वर) मध्यम माने गये हैं। तीन ज्येष्ठ (ज्येष्ठमास और वर- कन्या दोनों ज्येष्ठ) हो तो कभी भी शुभ नहीं हैं। किसी (भारद्वाज आदि) आचार्य का मत है कि जब तक सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में हो तब तक बरा कर उसके बाद ज्येष्ठ में भी विवाह करना चाहिये। अर्थात् ज्येष्ठ में कृत्तिका गत सूर्य ही निन्दित है, तथा वर और कन्या यदि दोनों ज्येष्ठ हों तो उनका विवाह शुभ नहीं होता।

आर्षमत - वर कन्या को ज्येष्ठता अपनी २ माता के प्रथम गर्भ की लेनी चाहिये। पुत्र या कन्या में पृथक् २ ज्येष्ठता नहीं है।

- एक कुल में विवाह आदि का समय
  - श्लोक **सुतपरिणयात् षण्मासान्तः सुताकरपीडनं**
  न च निजकुले तद्वद्वा भण्डनादपि मुण्डनम् ।
  न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
  न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया ॥ मु.चि. - १६

अपने कुल में (तीन पुरुष के भीतर) पुत्र के विवाह से ६ मास तक कन्या को विवाह नहीं करना चाहिये। एवं कन्या या पुत्र के विवाह से ६ मास तक किसी का मुण्डन भी नहीं करना चाहिये। दो सहोदर भाइयों

का विवाह दो सहोदर कन्याओ से नहीं करना चाहिये। दो सहोदर भाइयों या बहनों का विवाह ६ मास के मध्य नहीं करना चाहिये और शुभकार्य में पितृ क्रिया (श्राद्ध) भी नहीं करना चाहिये।

- श्लोक **एकस्मिन् वत्सरे चैव वासरे मण्डपे तथा।**
  कर्तव्यं मङ्गलं स्वस्त्रोर्भ्रात्रोर्यमलजातयोः॥ पराशर जी

यदि दो भाई या दो बहन यमल (एक गर्भ के) हों तो उन दोनों का उपनयन या विवाह या मुण्डन ६ मास के मध्य एक ही दि नमें तथा एक ही मण्डप में भी कर सकते हैं।

- विवाह का दिन निश्चय होने के बाद वर-कन्या के कुल में मरणा-शौच होने पर विवाह-मुहूर्त का निर्णय

- श्लोक **वध्वा वरस्याऽपि कुले त्रिपुरुषे नाशं व्रजेत् कश्चन निश्चयोत्तरम्।**
  मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शान्त्याऽथवा सूतक निर्गमे परैः॥ मु.चि. - १७

विवाह का निश्चय हो जाने के बाद कन्या के अथवा वर के कुल (तीन पुरुष के भीतर) में कोई मर जाय तो उसके एक मास के बाद विवाह करना चाहिये। कितने आचार्यों (मेधातिथि आदि) का मत यह है कि आवश्यक में मरणाशौच बीत जाने पर (अर्थात् मृत व्यक्ति का श्राद्धादि बीत जानेपर) शान्ति कर के मास के भीतर भी विवाह करना चाहिये।

सपिण्ड में किसी के मरण में १ मास बराना चाहिये। परन्तु यदि कन्या या वर के पिता-माता आदि की मृत्यु हो तो विशेष अशौच होता है। जैसे-

- श्लोक **वरवध्वोः पिता माता पितृव्यश्च सहोदरः।**
  एतेषां प्रतिकूलं चेन्महाविघ्नकरं भवेत्॥
  पिता पितामहश्चैव माता वाऽपि पितामही।
  पितृव्यः स्त्री सुतो भ्राता भगिनी वा विवाहिता॥
  एभिरेव विपन्नैश्च प्रतिकूलं बुधैः स्मृतम्।
  वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः कस्यचिन्मृतिः॥
  तदो सँवत्सरादूर्ध्व विवाहः शुभदो भवेद्।
  पितुराशौचमब्दं स्यात् तदर्ध मातुरेव हि॥
  मासत्रयं तु भार्यायाः, तदर्धं भातृ-पुत्रयोः।

इन वचन के अनुसार पिता के मरने पर १ वर्षे, माता के मरने पर ६ मास, स्त्री के मरने पर ३ मास और भाई तथा पुत्र के मरने पर १॥ मास तक अशौच रहते हैं। परन्तु सङ्कट अवस्था में प्रतिकूल समय में भी शान्ति पूर्वक विवाह करना ही चाहिये।

- श्लोक **नपुत्री द्वयमेकस्मै प्रदद्यात्तु कदाचन** वसिष्ठोक्तेः

एक वर को सहोदर दो कन्यायें नहीं देनी चाहिये।

- ग्रहयोग से चन्दमा का फल
  - श्लोक **चन्द्रे सूर्योदि संयुक्ते दारिद्रयं मरणं शुभम् ।**
  सौख्यं सापत्न्य वैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥ मु.चि. - ४५

विवाह के समय में यदि चन्द्रमा सूर्य के साथ हो तो दरिद्रता, मङ्गल के साथ हो तो मरण, बुध के साथ हो तो शुभ, गुरु के साथ हो तो सौख्य, शुक्र के साथ हो तो सपत्नी (सौत) और शनि के साथ हो तो वेराग्य ऐसा फल देता है। यदि चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के साथ हो तो मरण कराता है।

किसी भी पापग्रह के साथ चन्द्रमा का फल अशुभ ही कहा गया ह। शुभग्रहों में बुध-गुरु के साथ शुभ फल और शुक्र के साथ सपत्नी (शत्रुता) कही गयी है।

  - श्लोक **स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः ।**
  युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेय से तदा ॥ नारद जी

यदि चन्द्रमा अपनी राशि (४) या उच्च (२) या मित्रगृही (५।३।६) में अर्थात् २/३/४/५/६ इन पाँच राशियों में हो तो युति दोष नहीं लगता।

- विवाह में विहित नक्षत्र और अभिजित् का विचार
  - श्लोक **निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्य-**
  ब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः शुभो विवाहः ।
  रिक्ताऽमारहित तिथौ शुभेऽह्नि वैश्व-
  प्रान्त्यांघ्रिः श्रुति तिथि भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ मु.चि. - ५५

पञ्च शलाका वेध से रहित-मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा और स्वाती-इन ११ नक्षत्रो में, रिक्ता (४/९/१४) और अमावास्या को छोड़कर अन्य तिथियों में और शुभवारों में विवाह करना शुभ है।

उत्तराषाढ़ का चतुर्थ चरण और श्रवण का पहला पञ्चदशांश (१५ वॉ भाग) मिलाकर (मध्यम मान से १९ दण्ड) अभिजित् नक्षत्र होता हैं। अर्थात् अभिजित् नक्षत्र का अलग स्वतन्त्र मान नहीं है, वह उत्तराषाढ़ और श्रवण के मध्य ही भुगत जाता है।

- विवाह में तिथियों का विचार
  - श्लोक **शुक्रु द्वितीयादित एव कृष्णे पक्षे दशम्यन्तगताः प्रशस्ताः ।**
  ताश्चष्टमी-स्कन्द-गणेश-दुर्गाश्चतुर्देशी चापि तिथिर्विवर्ज्या ॥ वसिष्ठ जी

शुक्ल पक्ष में १/४/८/९/१४ तिथियों और कृष्ण पक्षमें ४/८/९/६/१२/१३/१४/१५ तिथियाँ विवाह में त्याज्य हैं। विवाह से लेकर चतुर्थी दिन तक श्राद्ध दिन और अमावस तिथि का पड़ना शुभ नहीं है।

विवाह में वार का विचार

- श्लोक **गुरु-शुक्र-बुधेन्दूनां दिनेषु सुभगा भवेत् ।**
  सूर्यार्कि भूमि पुत्राणां दिनेषु कुलटा भवेत् ॥ शुभेऽह्नि

सोम-बुध-गुरु-शुक्र-वार ही विवाह में शुभ हैं। रवि-मंगल-शनिवार त्याज्य हैं। दिन के सम्बन्ध में भी प्राचीन आचार्यों का यही सिद्धान्त है कि शुभग्रह के दिन ही विवाह में प्रशस्त हैं।

- श्लोक **वाराः प्रशस्ताः शुभखेचराणां सूर्यार्किवारौ खलु मध्यमौ तौ ।**
  त्याज्यः सदा भूमि सुतस्य वारः कामार्कतिथ्योरपि तौ प्रदोषो ॥ वसिष्ठः

श्री वसिष्ठ जी के मत से रवि और शनि मध्यम होने पर भी त्रयोदशी में रविवार और द्वादशी में शनिवार अत्यन्त दुष्ट कहा गया है। मंगलवार को तो सदा त्याज्य ही कहा गया है।

- श्लोक **न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौं विशेषतोऽर्कावनिभूशनीनाय् ।**

वार का दोष रात में नहीं लगता। विशेषकर रवि-मंगल-शनिवार का दोष रात में रहता ही नहीं। इसलिये रवि, मंगल और शनिवार की रात मैं विवाह में कोई दोष नहीं है।

विवाह में बाण दोष का विचार

- श्लोक **रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-**
  मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ ।
  रोगोऽथ व्रत-गेहगोप-नृपसेवा-यान-पाणिग्रहे
  वर्ज्योश्च क्रमतो बुधै रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिः । मु.चि. - ७४

जिस समय में जिस वार में और जिस कर्म में जो बाण निन्दित कहे गये हैं उनका ही त्याग करना चाहिये।

❖ **राजबाण**	शनिवार	दिन में	राजसेवा में
❖ **रोगबाण**	रविवार	रात में	उपनयन में
❖ **चौरबाण**	मंगलवार	रात में	यात्रा में
❖ **मृत्युबाण**	बुधवार	दोनों सन्ध्याओं में	विवाह में
❖ **अग्निबाण**	मंगलवार	सर्वदा	गृह संस्कार में

वेदी का प्रमाण और मण्डप उद्वासन का दिन

- श्लोक **हस्तोच्छ्राया वेदहस्तैः समन्तात्तुल्या वेदी स्नो वामभागे ।**
  युग्मे घस्त्रे षष्ठहीने च पंच सप्ताहे स्यान्मण्डपोद्वासनं सत् ॥ मु.चि. - ९७

विवाह-मण्डप के वांये भाग में एक हाथ ऊंची और चारों ओर समान चार २ हाथ नापवाली वेदी करनी चाहिये। विवाह के बाद छठे को छोड़ कर सम दिन (अर्थात् २, ४, ८, १० इत्यादि) और ५ वे तथा ७ वें दिन में विवाह-मण्डप का उद्वासन (उठाना) शुभ होता है।

- श्लोक **मंगलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमानतः ।**
  कार्यः षोडश हस्तो वा द्विषड्ढस्तो दशावधि ॥

मंगल कार्यो का मण्डप १६ हाथ उत्तम, १२ हाथ मध्यम और १० हाथ अधम होता है।

उपनयन आदि में मण्डप वटु (लड़के) के हाथ से और विवाह में कन्या के हाथ से नापना चाहिये। यज्ञादि का मण्डप यज्ञकर्ता यजमान के हाथ से नापना चाहिये।

- विवाह के पहले वर कन्या को तेल आदि लगाने का समय
  - श्लोक **मेषादिराशिजवधूवरयोर्बेटोश्च**
    तैलादिलापनविधौ कथिताऽत्र सङ्खया।
    शैला दिशः शर-दिगक्ष-नगाद्रि-बाणा
    बाणाक्ष-बाण-गिरयो विवुधैस्तु कैश्चित् ॥ मु.चि. - ९८

मेष आदि राशियों में जन्म लेने वाले वर-कन्या और उपनयन वाले वटु के तेल आदि लगाने में पण्डितों ने दिनों की संख्या इस प्रकार कही है।

मेष राशि में ७ दिन, वृष में १०, मिथुन में ५, कर्क में १०, सिंह में ५, कन्या में ७, तुला में ७, वृश्चिक में ५, धनु में ५, मकर में ५, कुम्भ में ५, और मीन में ७ दिन।

जिस वर कन्या या वटु की जन्म राशि मेष है उसे ७ दिन पहले तेल उबटन आदि लगाना चाहिये। ऐसे ही प्रत्येक राशिवालों को समझिये।

- गोधूलि लग्न की प्रशंसा
  - श्लोक **नास्यामृक्षं न तिथि-करणं नैव लग्नस्य चिन्ता**
    नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा ॥
    नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
    गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥ मु.चि. - १००

मुनियों ने *गोधूलि समय को प्रत्येक कार्य में प्रशस्त कहा है। इसलिये इस गोधूलि काल में नक्षत्र, तिथि, करण, लग्न, वार, नवांश, मुहूर्त, योग, अष्टमशुद्धि और जामित्र दोष इत्यादि किसी भी विषय का विचार नहीं करना चाहिये।

इस श्लोक में पाठक लोग गोधूलि की भरपूर प्रशंसा देखकर ऐसा न समझें कि जब कभी गोधूलि समय में विवाह कराना चाहिये। इसका भावार्थ यह है कि जब लग्न की सङ्कीर्णता हो (अर्थात लग्न शुद्धि ठीक से नहीं मिलती हो) तो गोधूलि लग्न में विवाह करना चाहिये। नक्षत्र वारादि का विचार तो अवश्य करना चाहिये।

॥ वधूप्रवेश प्रकरणम् ॥

विवाह होने के बाद स्त्री पति की अर्धाङ्गिनी होने के कारण पति के घर की अधिकारिणी होतो है. इसलिये वह पिता के घर से पति के घर जाती है। विवाहानन्तर स्त्री के प्रथम २ पति के घर में प्रवेश करने को 'वधूप्रवेश' कहते हैं।

- वधूप्रवेश का समय
  - श्लोक **समाद्रिपञ्चाङ्कदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले।**
    शुभः परस्ताद्विषमाद्वमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम्॥ मु.चि. - ७/१

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर सम (२/४/६/८/१०/१२/१४/१६) दिनों में और विषम में (५/७/९) वें दिनों में वधूप्रवेश शुभ होता है। यदि १६ दिनके भीतर नहीं हो सके तो उसके बाद प्रथम मास के विषम (१७/१९/२१/२३/२५/२७/२९ वें) दिनो में, एक मासके बाद विषम (३/५/७/९/११ वें) मासों में और एक वर्ष के बाद विषम (३/५) वर्षो में वधूप्रवेश शुभ होता है। परन्तु ५ वें वर्ष के बाद वर्ष मास का विचार नहीं होता, अर्थात ५ वर्ष के बाद जब कभी शुभ मुहूर्त देखकर वधूप्रवेश कराना चाहिये।

- वधूप्रवेश में शुभ तिथि-नक्षत्र
  - श्लोक **ध्रुव क्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले।**
    वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः॥ मु.चि. - ७/२

ध्रुव-क्षिप्र-मृदुसंज्ञक, नक्षत्र, श्रवण, धनिष्ठ, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में रिक्ता (४/९/१४) तिथि और मंगल-रविवार को छोड़कर अन्य तिथिवारों में वधूप्रवेश शुभ होता है। किसी मत से बुधवार को भी वधूप्रवेश में त्याज्य कहा गया है।

- विवाह के बाद स्त्री के पतिगृहस्थिति में विशेषता-
  - श्लोक **ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके पति हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ।**
    श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं तातं मधौ तातगृहे विवाहतः॥ मु.चि. - ७/३

विवाह के बाद प्रथम ज्येष्ठ मास में स्त्री यदि पति के घर में रहे तो पति के ज्येष्ठ भाई (भँसूर) को नाश करती है। यदि प्रथम अधिमास (मलमास) में पति के घर में रहे तो पति को, प्रथम आषाढ में रहे तो सास को, पौष में रहे तो श्वशुर को और प्रथम क्षय मास में पति के घर में रहे तो अपने को नाश करती है। एवं विवाह के बाद प्रथम चैत्र में स्त्री यदि पिता के घरमें रह जाय तो पिता को मारती है।

सारांश यह निकला कि जिस स्त्री का पिता जीवित हो वह विवाह के बाद पहले चैत्र में पिता के घर में नहीं रहे और भँसूर, पति, सास, श्वशुर और अपने जीवन के लिये वधुप्रवेश होने पर (विवाह से) प्रथम ज्येष्ठ, मॅलमॉस, आषाढ़, पौष और क्षयमास में पति के घर में न रहे।

॥ इति वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥

॥ द्विरागमन मुहुर्त ॥

- द्विरागमन का मुहुर्त
  - श्लोक
    चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ
    रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
    नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
    द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्त्रपे मृदूडुनि। मु.चि. - ८/१

विवाह से एक वर्ष के बाद विषम (३/५) वर्षों में सूर्य कुम्भ, बृश्चिक और मेष राशि में हो अर्थात् सौर फाल्गुन अग्रहण और वैशाख मासों में, कन्या के लिये सूर्य और बृहस्पति की शुद्धि रहने पर शुभ ग्रहों के (चं. बु. बृ. शु.) दिन में, मिथुन, मीन, कन्या, तुला और बृष लग्न में, लघुसंज्ञक, ध्रुवंसंज्ञक, चरसंज्ञक, मूल और मृदुसंज्ञक नक्षत्रो में द्विरागमन (विलम्ब वधूप्रवेश के लिये पिता के घर से यात्रा) कराना चाहिये।

- द्विरागमन में शुक्र का विचार पिता के घर से यात्रा का विचार इस श्लोक से करना चाहिये।
  - श्लोक
    दैत्येज्यो ह्यभिमुख दक्षिणे यदि स्याद्-
    गच्छेयुर्न हि शिशुगर्भिणीनवोढाः।
    बालश्चद्व्रजति विपद्यते नवोढा
    चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा॥ मु.चि. - ८/२

शुक्र यदि सम्मुख और दाहिने हों तो बालक वाली नवविवाहिता और गर्भवती स्त्री नहीं जायें। क्योंकि शुक्र के सम्मुख और दाहिने रहने पर यदि बालक जाय तो मर जाता है। नवोढा बाँझ होती है और गर्भिणी का गर्भ नष्ट हो जाता है। तात्पर्य यह है कि शुक्र के सम्मुख और दाहिने रहने पर किसी भी स्त्री का द्विरागमन नहीं करना चाहिये।

नव प्रसूता और गर्भवती स्त्री के लिये किसी भी यात्रा में इस शुक्र का विचार करना चाहिये और नववधू के लिये केवल द्विरागमन में।

- सम्मुख शुक्र का परिहार
  - श्लोक
    नगर प्रवेश विषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः।
    नृपपीडने नववधू प्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि॥ मु.चि. - ८/३

नगर के प्रवेश में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात्) आदि के उपद्रव में, विवाह में, देवता का दर्शन और तीर्थ की यात्रा में, राजा से पीड़ित होकर जाने में और नवीन वधूप्रवेश में सम्मुख भी शुक्र दोष कारक नहीं होता है। अर्थात् उक्त अवस्थाओ में शुक्र का विचार नहीं करना चाहिये।

- सम्मुख शुक्र का विशिष्ट अपवाद
  - श्लोक **पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः स्त्रीणां न दोषः प्रति शुक्र सम्भवः।**
    भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा॥ मु.चि. - ८/४

यदि पिता के घर में ही स्त्रियों के कुच (स्तन) और रजोदर्शन हो गये हो तो उनके द्विरागमन में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता। एवं भृगु, अंगिरा, वत्स, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भरद्वाज मुनि के वंश में (इनके गोत्र में) भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता।

  - श्लोक **रेवत्यादिमृगान्तेषु यावत् तिष्ठति चन्द्रमाः।**
    तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखस्थो न दोषकृत॥

रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्रों में चन्द्रमा के रहने पर शुक्र अन्धा होता है, वह सम्मुख रहने पर भी दोष कर नहीं होता।

  - श्लोक **अस्तं याते किल सुरगुरौ भार्गवे वा कृशे वा**
    चैत्रे पौषे तपसि च भृगौ दक्षिणे सम्मुखे वा।
    सिंहस्थे वा सुरपति गुरौ निद्रया युक्तविष्णौ
    गच्छेत् कन्या स्वपति सहिता वर्षमेकं हि यावत्॥

आजकल बहुतों का ऐसा मन है कि विवाह से एक वर्ष के भीतर वधूप्रवेश होने में किसी भी लग्न या शुद्धि आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल तिथि-नक्षत्र-दिन शुद्धि ही देखी जाती है।

  - श्लोक **चैत्रे पौषे हरिस्वप्ने गुरोरस्ते मलिम्लुचे।**
    नवोढ़ागमनं नेव कृते पंचत्वमाप्नुयात्॥ श्रीव्यास जी

एक वर्ष के बाद गुरु-शुक्रोदय-शुद्धि सब देखना चाहिए। तथापि १ वर्ष के भीतर भी पौष, चैत्र, मलमास और हरिशयन को बराना ही चाहिए क्योंकि का वचन है-

॥ इति द्विरागमन प्रकरणम्॥

- किन-किन जगहों पर पत्नी को पति के दाई / बाई तरफ बैठना चाहिये ?

हमारे शास्त्रों में पति-पत्नी के संबंध को बहुत ही पवित्र मान कर इसकी प्रशंसा की गई है। इस संबंध द्वारा स्त्री-पुरुष अपने-अपने दायित्वों को पूरा करते हुए इस धरती पर समस्त सुख-साधनों का भोग कर मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्त करें, इसके लिए ऋषि-मुनियों ने कुछ नियम बनाएं। इन्हीं नियमों में बताया गया है कि कब स्त्री को पुरुष के बाईं तरफ तथा कब दाईं तरफ बैठना चाहिए।

शास्त्रों के अनुसार जो कर्म स्त्री प्रधान या इस सांसारिक जीवन से संबद्ध होते हैं, उनमें स्त्री को बाएं तरफ बैठना चाहिए। उदाहरण के लिए स्त्री-पुरुष का सहवास, दूसरों की सेवा करना तथा अन्य सांसारिक कार्यों में पत्नी के लिए पति के बाई तरफ बैठने का नियम है।

इसी प्रकार जो कार्य पुरुष प्रधान या पुण्य और मोक्ष देने वाले हैं जैसे कन्यादान, विवाह, यज्ञ, पूजा-पाठ आदि, उनको करते समय पत्नी दाएं तरफ विराजमान होती है।

- ऐसे समय पत्नी को पति की बाईं तरफ बैठना चाहिए।
  - **वामे सिन्दूर दाने च वामे चैव द्विरागमने,**
    वामे शयनैक श्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।
  - **आर्शीवार्दे अभिषेके च पादप्रक्षालेन तथा,**
    शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत॥ संस्कार गणपति
  - सिंदूर दान, द्विरागमन के समय, भोजन, शयन, सहवास, सेवा तथा बड़ों से आर्शीवाद लेते समय पत्नी को पति के बाईं तरफ रहना चाहिए।

- इन कामों में पत्नी को पति के दाईं तरफ बैठना चाहिए
  - **कन्यादाने विवाहे च प्रतिष्ठा-यज्ञकर्मणि,**
    सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणत- स्मृता। संस्कार गणपति
  - कन्यादान, विवाह, यज्ञकर्म, पूजा तथा अन्य धर्म-कर्म के कार्यों में पत्नी को सदैव पति के दाईं और बैठना चाहिए।

१. **वामे सिन्दूर दाने च वामे चैव द्विरागमे। वामभागे च शय्यायां नामकर्म तथैव च॥**
शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु। वामे ह्युपविशेत् पत्नी व्याघ्रस्य वचनं यथा॥
२. **पतिपुत्रान्विता भव्याश्चतस्रः सुभगाः स्त्रियः। सौभाग्यमस्यै दद्युस्ता मङ्गलाचारपूर्वकम्॥**
पतिपुत्रवती नारी सुरूपगुण शालिनी। अविच्छिन्नप्रजा साध्वी सदया सा सुमङ्गली॥